1996- 1998

बिलासपुर

१

जेल

कार्यक्रम

प्रस्तावना

अपराध-उन्मूलन की शासन मानसिकता व कार्यक्रम के तहत यंत्रणा विधि (भय व प्रलोभन) से सुधरने के लिए बाध्य करने के लिए कारागृहों का निर्माण, नियम एवं अनुशासन स्थापित किया गया।

अनुसंधानित मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) की रोशनी में मानव में शिक्षापूर्वक जागृति एवं हमेशा के लिए 'व्यवस्था में जीने' का संकल्प उदय होना अपराध उन्मूलन का सूत्र समझ में आया। इसके प्रयोग की इच्छा भी रही।

शासन-प्रशासन की शुभ एवं सुधार देखने की मानसिकता के तहत कई नये-नये प्रयोग कारागृहों में किए गये। ऐसे अवसर का संयोग होने पर बिलासपुर जेल में 'जीवन विद्या अभियान' प्रारंभ हुआ।

जिला अधिकारी श्री मनोज झालानी के सौजन्यता से झाबुआ जिले में 'जीवन विद्या' का प्रयोग सरकारी अधिकारीयों, कर्मचारीयों, शिक्षकों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के साथ किया गया। इन कार्यक्रमों के अच्छे परिणामों से संतुष्ट होकर श्री झालानी जी ने अमरकंटक के निकटस्थ बिलासपुर जिले में कार्य करने का सुझाव मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता पूज्य नागराज जी को दिया। साथ ही बिलासपुर संभाग के कमिश्नर श्री हर्षमंदर जी को निवेदन किया कि 'जीवन विद्या' सही समझकर सही जीने की कला है। इससे प्रशासनिक एवं सुधार कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ेगी।

इसी तारतम्यता में श्री गणेश बागड़िया, श्री पवित्रकुमार चौधरी और श्री जितेन्द्र तिवारी 15 जनवरी 97 को श्री हर्षमंदर जी से मिले। माननीय हर्षमंदर जी ने बिलासपुर जेल में कार्य करने का प्रस्ताव रखा। इसे स्वीकारकर 15 फरवरी 97 से

'जीवन विद्या' शिविर प्रारंभ करना निश्चित हुआ।

इस कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलाने एवं इसके परिणामों को जाँचने के लिए श्री हर्षमंदर, श्री झालानी एवं डा. के. के. गुप्ता (जेल अधीक्षक, बिलासपुर) ने अपने पद एवं अधिकारों का प्रयोग किया ही, ~~आपने~~ इतना ही नहीं अपने चिन्तनशील मानसिकता एवं संवेदना से कैदीयों को प्रेरित किया और शिविर के समय कईबार उपस्थित होकर अध्ययन के लिए ~~प्रेरित किया~~। प्रोत्साहित किया

पूरे समय मे जेल के अधिकारी एवं कर्मचारीयों ने अपनी मानवीय संवेदना एवं शुभाकांक्षा सहित कर्तव्यों को पूरा किया और इस कार्य मे अपनी भागीदारी का निर्वाह किया।

विश्वास है आगे भी ऐसे शुभ संयोगो व प्रेरणा से कारागृह, 'मानवीय संचेतना स्थापना केन्द्र' के रूप में विकासित होंगे।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अध्ययन विधि व वस्तु

"मनुष्य न्याय का याचक, सही कार्य व्यवहार करने का इच्छुक और जन्म से सत्य वक्ता है।"

एक शिशु में भी इन तथ्यों का अध्ययन किया जा सकता है कि शिशु स्वयं न्याय पाना चाहता है। न्याय की अपेक्षा रहते हुए भी शिशु को न्याय का स्वरुप ज्ञात नहीं रहता है। जैसे शिशु चाहता है कि उसके साथ विश्वास किया जाए, सम्मान किया जाए। शिशु अपनी आवश्यकताओं के लिए अभिभावकों पर आश्रित रहता है। अभिभावक आवश्यकताओं को पूरा करें ऐसा भी चाहता है।

शिशु सही कार्य व सही व्यवहार भी करना चाहता है जैसे चलने में सफल नहीं होने पर पुनः चलने का प्रयास करता है — जब तक चलने में सफल न हो जाए। किसी दूसरे शिशु के साथ व्यवहार करने पर दूसरा पीड़ित होता है तो पहले शिशु को अच्छा नहीं लगता।

शिशु जन्म से सत्यवक्ता होता है — जिस वस्तु या क्रिया को देखता या सुनता है उसे वैसा ही भाषा द्वारा व्यक्त करता है।

शिशु को डाँटने या मारने पर नकारात्मक प्रतिक्रिया द्वारा अस्वीकार करता है।

यदि शिशु को न्यायपूर्ण व्यवहार, सही कार्य और सत्य स्पष्ट (समझ) न हो तो वह स्वयं न्याय नहीं कर पाता है — अन्याय करता है; सही कार्य नहीं कर पाता — गलती करता है एवं सत्य नहीं बोल पाता है — असत्य भाषण करता है। प्रारंभ में अन्याय, गलती व असत्य भाषण का स्वरुप छोटे स्तर पर होता है जिसे अभिभावक और अन्य परिवार जन अनसुनी भी करते हैं क्योंकि उन्हें शिशु से सही कार्य व न्याय की

अपेक्षा भी नहीं होती ; हाँ सत्य भाषण को अपेक्षा रहती ही है। किंतु जब शिशु किशोर अवस्था मे पहुंचता है तब यही गलती, अन्याय व असत्य भाषण, परिवार व परिवार के बाहर पीड़ा का कारण बनता है। शुरु से ही सही न करने के कारण शिशु कुंठित होता रहता है। किशोर युवावस्था तक कई अवसरों पर कुण्ठा को व्यक्त करता है। इसी से परिवार व समाज पीड़ीत होता है। ऐसी स्थिति मे उन्हे दण्डित करने की प्रक्रिया की जाती है।

मूलतः शिशु में न्याय पाने, सही कार्यव्यवहार करने और सत्यभाषण की प्रवृत्ति होती है- इसे बनाए रखने के लिए परंपरा मे न्याय का स्पष्ट स्वरुप, सहीकार्य का निश्चित स्वरुप व प्रक्रिया एवं सत्य की अवधारणा व व्याख्या में निश्चयन और सार्थकता अनिवार्य है। तभी सभी नर-नारी न्याय को समझकर न्यायपूर्ण व्यवहार के लिए प्रवृत्त होगा, सही कार्य को समझकर करने के लिए प्रतिबद्ध होगा एवं सत्य को समझकर समझाने के लिए तत्पर होगा।

आज परंपरा में न्याय, सहीकार्य व सत्य का स्वरुप निश्चित नहीं है। इन्हीं मे सर्वाधिक मतान्तर है। अतएव प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना (या मनमानी) न्याय, मनमानी सही कार्य व मनमानी सत्य को स्वयं ही मान लेता है। ये सत्य, सहीकार्य व न्याय अन्य कई व्यक्ति के लिए क्रमशः असत्य, गलती व अन्याय हैं ही। फलतः विरोध व द्वन्द होता ही रहता है। यही द्वन्द शारीरिक स्तर पर या घटना के रुप में व्यक्त होता है। इसे ही अपराध कहते हैं।

प्रत्येक शिशु प्रारंभ मे अपने अभिभावक या किसी करीबी व्यक्ति के व्यवहार, कार्य व विचारों का आज्ञापालन, अनुकरण व अनुसरण करता है। जैसे-जैसे उसे इनमे अन्तर्विरोध

दिखता है वैसे-वह पीड़ित-कुंठित होता है एवं स्वयं ही मनमानी ढंग से न्याय, सही कार्य व सत्य को मान लेता है। जिस दिन से कोई व्यक्ति न्याय, सहीकार्य व सत्य को मनमानी ढंग से मान लेता है उस दिन से वह स्वयं को बड़ा व समझदार मानता है। फिर किसी की बात नहीं सुनता, आज्ञापालन करना बंद कर देता है; अनुकरण व अनुसरण की आवश्यकता ही खत्म मान लेता है।

आज प्रचलित शिक्षा भी तमाम अन्तर्विरोधों से भरी हुई है। जैसे- राजनीति शास्त्र एवं समाज शास्त्र के सिद्धांत, विज्ञान व धर्म के सिद्धांत, नीतिशास्त्र व मनोविज्ञान के सिद्धांत, अर्थशास्त्र, उत्पादन तकनीकी और पर्यावरण के सिद्धांत, परस्पर विरोधी हैं। अत: उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति इन अन्तर्विरोधों के चलते कुण्ठित होता है या दासतावश परिष्कृत तरीके से अपराध करता है एवं कानून की गिरफ्त से बचा रहता है। अशिक्षित या अल्पशिक्षित व्यक्ति आदिम तरीके से गलती एवं अपराध करता है और अधिकांश दंडित होता है।

तन, मन, धन का दुरुपयोग ही गलती है। इसके कारण अन्य व्यक्ति के तन, मन, धन की सुरक्षा का हनन होने पर अपराध कहलाता है। परधन, परनारी/परपुरुष व परपीड़ात्मक कार्य व्यवहार ही अपराध का स्वरूप है।

"स्वयं श्रेष्ठ बनने एवं श्रेष्ठ रूप मे प्रस्तुत होने की प्रवृत्ति वश ही सही व्यवहार व सही कार्य हैं, न कि भय व प्रलोभन वश"

प्रत्येक मनुष्य किसी भी कार्य को सही मानकर ही करता है। शंका की स्थिति मे अनिर्णय की स्थिति मे रहता है कार्य नहीं करता है। कोई गलती या अपराध करने के पूर्व भी यही मानसिकता रहती है। गलती करते समय अपराधी यही

मानता है कि इस परिस्थिति में सही एवं समाधानकारी कार्य ही मैं कर रहा हूँ। बाद मे कई बार अपराधी अपने कृत्य को स्वयं ही या समाज के दबाव से गलत मान लेता है, कभी-कभी गलत मानता भी नहीं है।

इसका समाधान यही है कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा पूर्वक हर परिस्थिति में सही कार्य व सही व्यवहार का बोध कराया जाए - जिससे व्यक्ति मे सही व न्याय करने का संस्कार (निश्चयस्वीकृति) बने और निरंतर सही कार्य व्यवहार मे प्रवृत्त रहे। गलती करने के लिए प्रवृत्ति बने ही नहीं।

गलती करते समय गलती करने से रोकने पर गलती द्वारा होने वाली क्षति को तात्कालिक रूप में रोका जा सकता है। परंतु इससे व्यक्ति में गलती करने की प्रमप्रवृत्ति (अज्ञान) बना ही रहता है। अनुकूल अवसर पर गलती का प्रकटन होता ही है। एक व्यक्ति को गलती करने से रोकने के लिए उसके चारों ओर हर समय सही कार्य व विचार सम्पन्न अनेक व्यक्ति होने चाहिए। इससे भी यही निष्कर्ष निकलता है कि सही समझ व कार्य सम्पन्न व्यक्ति शिक्षा द्वारा तैयार किए जाए।

दण्ड कभी भी विधि नहीं हो सकता। दण्ड निषेध ही है। किसी व्यक्ति द्वारा गलती या अपराध होने पर आजकल उसे दंडित करने का प्रचलन है। यह सभी देशों मे है। इसके लिए दण्ड संहिता एवं दण्डाधिकारी होते हैं। अपराध व गलती के बाद दंड देने से व्यक्ति में सुधार नहीं होता है - इसके साक्ष्य भरे पड़े हैं। दंड के भय से या किसी प्रलोभन के द्वारा अपराध से विमुख करने की मानसिकता के तहत आज शासन तंत्र, प्रशासन तंत्र, न्यायपालिका, प्रबंधन तंत्र, धर्मतंत्र एवं शिक्षा संस्थान चल रहे हैं। अपराध रोकने मे इनकी सफलता नहीं है अपितु अपराधों में वृद्धि होना आकलित हो रहा है।

आज मनुष्य गलती या अपराध से जितना भी दूर है। इसका कारण प्रत्येक मनुष्य में स्वयं स्फूर्त श्रेष्ठता को प्रमाणित करने की प्रवृत्ति ही है। प्रत्येक मनुष्य स्वयं को श्रेष्ठतम रूप में ही प्रस्तुत करना चाहता है। इसी मानसिकता के कारण ही शरीर स्वच्छता, श्रेष्ठ भाषा का अनुकरण करता है। स्वयं से श्रेष्ठ क्रिया कलापों को व्यक्त करता है। सामान्यतः ऐसा ही होता है। द्वेष की स्थिति में इसके विपरीत क्रियाकलाप, भाषा व वेषभूषा का प्रदर्शन होता है।

जीवन में सम्मान, श्रद्धा, गौरव, विश्वास जैसे मूल्यों का भास-आभास होने पर इन श्रेष्ठताओं को आत्मसात करने के लिए प्रयास की गति काफी बढ़ जाती है। इन्हीं मूल्यों की प्रतीती व अनुभूति होने पर प्रत्येक मनुष्य में श्रेष्ठता हमेशा के लिए स्थापित हो जाती है। स्वयं ही इन श्रेष्ठताओं का प्रमाण बनता है।

शिक्षापूर्वक जीवन, व्यवहार मूल्य, व्यवसाय मूल्य, मानव मूल्य, व जीवन मूल्यों को बोध कराने की व्यवस्था होने पर मनुष्य में श्रेष्ठता स्थापित होना एक सामान्य उपलब्धि होगी जो हर मनुष्य के लिए प्राप्य होगी।

"सुख व समझदारी अविभाज्य है।"

मनुष्य सुखधर्मी है। मनुष्य निरंतर सुख चाहता है। मनुष्य से सुख की कामना को अलग नहीं किया जा सकता। सुख का अनुभव करने के लिए मनुष्य कुछ मान्यताएँ बनाता है। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर जीने के लिए अपनी विचार-शैली को तैयार करता है। इसके पश्चात मूल मान्यताओं के आधार पर व्यवहार और व्यवसाय करता है। जीने के बाद

सुख का अनुभव होने पर 'मूल मान्यताओं' को सत्य के रूप में स्वीकारता है। यदि सुख का अनुभव नहीं होता है तो 'मूल मान्यताओं' के प्रति शंका उत्पन्न हो जाती है या स्वयं को सुखानुभव योग्य ही नहीं मानकर कुंठित रहता रहता है।

जब 'मूल मान्यताओं' के प्रति शंका होती है तब अन्य मान्यताओं को स्वीकारा जाता है। साथ ही विचार शैली में परिवर्तन होता है। यही परिवर्तित विचार शैली व्यवहार व व्यवसाय के परिवर्तित रूप में व्यक्त होती है। ऐसा तब तक होता रहता है जब तक सुख की निरंतरता न हो जाए। सुख की निरंतरता होने के बाद परिवर्तन की आवश्यकता नहीं रहती।

इसके विपरीत, जब उपदेश या किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के प्रभाव से व्यवहार व व्यवसाय में जो परिवर्तन होता है वह परिवर्तन कुछ दिन का ही रहता है। व्यक्ति पुनः अपने पुराने कार्यकलापों में लौट आता है।

जिन मान्यताओं के आधार पर मनुष्य जीता है वह उसे परम्परा (मानवकृत वातावरण) से ही प्राप्त होता है। विगत से परम्परा में 2 प्रकार की मान्यताएँ प्रचलित हैं:-

(i) आदर्शवादी मान्यता - स्थायी सुख का आधार ईश्वर है।

(ii) भौतिकवादी मान्यता - भौतिक वस्तुओं के भोग से ही सम्पूर्ण सुख मिलता है।

इन दोनों मान्यताओं से मनुष्य चिराकांक्षित सुख की निरंतरता को नहीं पा सका।

'अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन' के मूल प्रतिपादनों का बोध होने पर न्यायपूर्ण व्यवहार व नियमपूर्ण व्यवसाय करने में सफल होकर मनुष्य सुखी होता है।

मूल प्रतिपादनों का बोध होने के लिए अध्ययन-अध्यापन विधि है। इसमें मूल प्रतिपादनों को समझते हुए शिक्षकों

द्वारा अध्ययन कराया जाता है। शिविरार्थीगण जिज्ञासापूर्वक इसे सुनते हैं; स्वयं मे नीरिक्षण, परीक्षण (जाँच) कर यह निश्चयन करते हैं कि यही निरंतर सुखी होने की विधि है या नहीं सुखी होने के नियम के रूप मे स्वीकार होने पर अध्ययन पूरा हो जाता है। अध्ययन के पश्चात प्रमाणीकरण के लिए स्वयं स्फुर्त प्रक्रिया का उदय होता है।

बोध होने के पूर्व जिज्ञासा और प्रश्नों का स्वागत किया जाता है। उचित उत्तर द्वारा समाधान करने की व्यवस्था रहती है।

'जीवन विद्या' शिविर सामान्यतः 7 दिन के लिए होता है। प्रति दिन 6-8 घंटे तक अध्ययन कार्य होता है।

अध्ययन वस्तु

जीवन विद्या शिविर मे मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) के अन्तर्गत सम्पूर्ण अध्ययन कराया जाता है। मध्यस्थ दर्शन, अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान है। इसमे सुखी होने के अर्थ मे मनुष्य के चारो आयाम (व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति) में एकसूत्रता का अध्ययन कराया जाता है। मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता श्री ए. नागराज हैं।

यह दर्शन चार भागों मे है।

(i) मानव व्यवहार दर्शन
(ii) मानव कर्म दर्शन
(iii) मानव अभ्यास दर्शन
(iv) मानव अनुभव दर्शन

दर्शन के आधार पर 3 वाद हैं:-

(i) समाधानात्मक भौतिकवाद

(ii) व्यवहारात्मक जनवाद
(iii) अनुभवात्मक आध्यात्मवाद

दर्शन और वादों के आधार पर 3 शास्त्र हैं:-

(i) मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान
(ii) आवर्तनशील अर्थशास्त्र
(iii) व्यवहारवादी समाज शास्त्र

दर्शन, वाद और शास्त्रों के आधार पर 3 योजनाएँ हैं:-

(i) जीवन विद्या योजना
(ii) शिक्षा का मानवीयकरण योजना
(iii) परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना

जीवन विद्या शिविर में मुख्यतः निम्न बिन्दुओं पर अध्ययन कराया जाता है:-

1. प्रत्येक मनुष्य जीवन और शरीर का संयुक्त रूप है।
2. शरीर गर्भाशय मे रचित होने वाली वंशानुषंगी रचना है।
3. जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु (चैतन्य इकाई) है।
4. सभी जीवन पाँच अक्षय बल और पांच अक्षय शक्ति सम्पन्न है।
5. जीवन बलों और जीवन शक्तियों में एकसूत्रता (तालमेल) होने पर मनुष्य सुख, शांति, संतोष और आनन्द की निरंतरता का अनुभव करता है।
6. जीवन में जानने, मानने, पहचानने और निर्वाह करने की क्रिया होती है।
7. प्रत्येक जीवन कल्पनाशीलता और कर्मस्वतंत्रता सम्पन्न है।
8. जीवन मे समाधान होने पर विश्राम (सुख) होता है, समस्या होने पर श्रम = दुख (पीड़ा) होता है।
9. सत्ता मे संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व है। यह निरंतर सह-अस्तित्व

के रूप मे है। अस्तित्व अविनाशी है; न घटता है, न बढ़ता है।

10. सत्ता ही ज्ञान, चेतना, पूर्ण, परमात्मा, पारदर्शी, पारगामी, व्यापक और शून्य है।

11. प्रकृति 4 अवस्थाओं मे है- पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान अवस्था।

12 मनुष्य ज्ञानावस्था की ईकाई है। मनुष्य कर्म करने मे स्वतंत्र और फल भोगने मे परतंत्र है। अन्य अवस्थाओं मे कर्म स्वतंत्रता नही है।

(13) अस्तित्व में पूरकता सिद्धांत नित्य प्रभावी है।

14. पदार्थ अवस्था परिणाम अनुषंगी व्यवस्था है। प्राण अवस्था व जीव अवस्था क्रमशः बीजानुषंगी और वंशानुषंगी व्यवस्था है। मानव संस्कार अनुषंगी व्यवस्था है।

15. पदार्थ अवस्था नियम पूर्वक व्यवस्था है। प्राण अवस्था नियम और नियंत्रण पूर्वक, जीव अवस्था नियम, नियंत्रण और संतुलन पूर्वक व्यवस्था है। ज्ञानावस्था (मनुष्य) नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान) व सत्य पूर्वक व्यवस्था है।

16. मानव सम्बन्धों की क्रियात्मक पहचान, मूल्यों के निर्वाह और मूल्यांकन पूर्वक उभय तृप्ति होना ही न्याय है।

17. मनुष्य का लक्ष्य बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व है।

18. अस्तित्व सहज व्यवस्था की समझ ही समाधान है।

19. आवश्यकता से अधिक उत्पादन और उत्पादित वस्तुओं के सदुपयोग से समृद्धि है।

20. मनुष्य की आवश्यकता सीमीत है, संसाधन भी सीमीत हैं। संसाधनों के सदुपयोग से समृद्धि व दुरुपयोग से अभाव है।

21. स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष व दयापूर्ण कार्यव्यवहार ही सामाजिक नियम है।

22. खनिज और वनस्पति के उत्पादन के अनुपात मे व्यय, और उत्पादन मे सहायक होना ही प्राकृतिक नियम है।

23. सुख, शांति, संतोष और आनन्द जीवन मूल्य है।
24. धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा व करुणा मानव मूल्य है।
25. कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, ममता, वात्सल्य सम्मान और स्नेह स्थापित मूल्य हैं। सम्बन्धों की पहचान व निर्वाह होने पर इन मूल्यों का अनुभव होता है। इसके फलस्वरूप सौम्यता, सरलता, रम्यता, अनन्यता, सौजन्यता, उदारता, सहजता, सौहार्द्र व निष्ठा रूपी शिष्ट मूल्य प्रकाशित होते हैं।
26. सुखी मनुष्य सुख बाँटता है एवं दुखी मनुष्य दुख बाँटता है।
27. रूप के साथ सच्चरित्रता, बल के साथ दया, बुद्धि के साथ विवेक, पद के साथ न्याय एवं धन के साथ उदारता से सुखी मनुष्य की पहचान है।

बिलासपुर जेल में शिविरों का विवरण

सर्वप्रथम 15 फरवरी 97 से 21 फरवरी 97 तक आदर्श जिला जेल बिलासपुर में 'जीवन विद्या' शिविर हुआ। शिविर का प्रबोधन श्री साधन भट्टाचार्य ने किया।

शिविर के प्रारंभ में लगभग 30 चुने हुए बंदियों को शामिल किया गया। लगभग सभी हत्या के आरोप में विचाराधीन बंदी* थे। सभी लम्बे समय से जेल में निरुद्ध थे।

प्रथम सत्र में प्रातः 9 बजे से शिविर प्रारंभ हुआ। प्रबोधक ने जीवन विद्या शिविर में अध्ययन करने का प्रस्ताव रखा:-

1. इस शिविर में हम सभी अपनी जिम्मेदारी से बात करेंगे। यदि किसी ग्रंथ या महापुरुष के वचनों को उद्धृत करेंगे तो भी अपनी जिम्मेदारी पर ही बोलेंगे, इस पर पूछे गये सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे। अपनी जिम्मेदारी पर बोलने पर हम सभी एक दुसरे को अच्छी तरह समझ सकेंगे।
2. आप लोगों को कोई भी उपदेश नहीं दिया जाएगा बल्कि अध्ययन एवं चिन्तन के लिए मुद्दों को स्पष्ट किया जाएगा।
3. इसके पूर्व यदि हमसे कोई गलती या अपराध हुआ है तो उस पर कोई चर्चा नहीं होगी, कोई भी प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे। क्योंकि अपनी गलतियों के स्मरण से पीड़ा होती है इसलिए हम सभी अपनी गलतियों को सुधारना और भूलना चाहते हैं। हम सभी सुख चाहते हैं।

---

* उस समय तक आजन्म कारावास एवं अन्य लम्बी सजायाफ्ता को बिलासपुर जिला जेल में रखने का प्रावधान नहीं था। सजा के उपरान्त बंदीयों को अन्य जेल में स्थानांतरित कर दिया जाता था।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

④ जेल के नियमों एवं मर्यादाओं के पालन में हमारी सहमति रहेगी। इस पर किसी प्रकार के बदला / का आश्वासन हमारी ओर से नहीं रहेगा।

हम सभी मर्यादित और शोभनीय ढंग से जीने के लिए जेल के नियमों पर भी चर्चा करेंगे।

⑤ प्रत्येक मुद्दे को स्पष्ट किया जाएगा। सभी शिविरार्थी उस मुद्दे पर सहमत होने के पर ही अगले मुद्दे का अध्ययन किया जाएगा।

यह प्रस्ताव सभी को स्वीकार होने पर शिविर प्रारंभ हुआ। शिविर दो पालीयों में हुआ। प्रातः 8 से 1 एवं 3 से 5। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थीयों ने मौखिक और लिखित रूप में अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया जिसका सार-संक्षेप निम्न है:-

i/ 'जीवन विद्या' में पारंगत होने पर यह धरती स्वर्ग हो जाएगी।

ii/ हम सभी 'जीवन विद्या' में पारंगत होकर जीना चाहते हैं। इसके लिए और अधिक शिविर की आवश्यकता है।

iii/ जेल के बाहर 'जीवन विद्या' की जरूरत जेल से अधिक है विशेषकर पुलिस और प्रशासन के लिए।

iv/ परिवार में हमारा सही मूल्यांकन संभव है एवं परिवार में ही न्याय मिल सकता है। सभी परिवारों में न्याय सुलभ होने के बाद ही समाज में न्याय मिल सकेगा।

v/ 'जीवन विद्या' के पावन ज्ञान से परिचय कराने के लिए कमिश्नर श्री हर्षमंदर एवं जेल अधीक्षक डा. के. के. गुप्ताजी के प्रति हम सभी कृतज्ञ हैं।

प्रथम शिविर के परिणामों को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन कमिश्नर श्री हर्षमंदर, कलेक्टर श्री मनोज सालानी एवं जेल अधीक्षक डा. के. के. गुप्ता जी ने बारंबार शिविर आयोजित

करने का निर्णय लिया। इसी कड़ी में दूसरा शिविर 27-3-97 से 3-4-97 तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर का सम्बोधन श्री गणेश बागड़िया और श्री साधन भट्टाचार्य ने संयुक्त रूप मे किया। सहयोगी के रूप में श्री जितेन्द्र तिवारी, श्री महेश पाण्डेय और श्री कुमार सम्भव उपस्थित रहे। शिविर मे 20 नये शिविरार्थीयों का चयन किया गया था। शिविरार्थीयो का चयन डा. के.के गुप्ता जीने अपने साथीयों के साथ विचार विमर्श के बाद किया। इस शिविर मे भी मुख्यतः हत्या के अभियुक्त शामिल किए गये। पहले शिविर मे भागीदारी करने वाले 16 व्यक्ति ~~6~~ जेल प्रशासन से अनुमति लेकर पुनः शिविर मे अध्ययन किए।

अध्ययन का समय प्रातः 7 से 1 बजे दोपहर तक रहा। शिविर के अंतिम दिन ~~xx~~ शिविरार्थीयो ने मौखिक मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

पुराने शिविरार्थीयों मे उत्साह काफी बढ़ा रहा। शिविर के अंत मे कुछ शिविरार्थीयों अपने विचार व व्यवहार मे परिवर्तन को स्वीकारा जिसे ~~xx~~ अन्य बंदी साथियो ने सत्यापित किया। चार शिविरार्थीयों ने स्वयं स्फुर्त शिविर प्रबोधन की इच्छा व्यक्त की।

नए शिविरार्थीयों ने स्वीकार किया कि उन्हे एक नई दिशा मिली है। "अब तक समझदारी के अभाव मे हम सभी गलती करते थे। अब हमारे व्यवहार में सुधार होगा"। कुछ शिविरार्थीयोंने इस अल्प अवधि मे भी अपने व्यवहार मे परिवर्तन का सत्यापन किया। सभी शिविरार्थी और शिविर चाहते रहे। शिविर के बाद मे शिविरार्थीयो के इच्छानुसार 'मानव व्यवहार दर्शन' पुस्तक एवं 'परिवार मानव' पत्रिका वितरित की गई।

इस शिविर के पश्चात जेल के बंदी भाई श्री करुणादास, श्री गणेशराम, श्री रामानंद तिवारी व श्री शम्भूदयाल जेल के बुजुर्ग वार्ड (वार्ड नं 14) में शिविर की मानसिकता एवं योजना तैयार

किए। अपनी योजना को वे चक्कुर साहब (डिप्टी जेलर श्री लखाना) के सम्मुख प्रस्तुत किया। चक्कुर साहब ने उत्साहवर्धन कर प्रस्ताव को अपने उच्चाधिकारियों को अवगत कराया एवं शिविर आयोजित करने की सहर्ष ~~अनुमति~~ अनुमति मिली।

3-5-97 से 10-5-97 ~~सि.~~ तक शिविर चला। शिविर स्थली वार्ड नं 14 रही। शिविर का समय प्रातः 8 से 11 एवं दोपहर 3 से 5 रहा।

इस शिविर से प्रबोधकों मे यह विश्वास बना कि वे जेल मे रहते हुए भी अच्छे काम में प्रवृत्त हो सकते हैं — 'जीवन विद्या' का प्रबोधन भी कर सकते हैं। तथा हमारे ~~परिवर्तन~~ प्रबोधन से भी लोगों मे आस्था बन सकती हैं, विचार व व्यवहार मे परिवर्तन हो सकता है।

बंदीयों को इस शिविर से एक नई दिशा मिली। उन्हें यह विश्वास हुआ कि समझदारी का कार्य व व्यवहार करने पर जेल में कोई मानसिक पीड़ा व दबाव नहीं है। बल्कि इसमें सुख है एवं इस कार्य के लिए सभी लोगों की स्वीकृति व मदद है।

बंदियों द्वारा स्वयंस्फुर्त शिविर आयोजित करने, प्रबोधित करने एवं अध्ययन करने के लिए बंदियों को मानसिक रूप से तैयार करने की प्रवृत्ति से जेल व जिला प्रशासन आश्वस्त हुआ।

इसके पश्चात जिला व जेल प्रशासन ने निर्णय लिया कि आदतन अपराधीयों को 'जीवन विद्या' शिविर कराया जाए एवं मूल्यांकन किया जाए। इस हेतु 15-5-97 से 21-5-97 तक 24 शिविरार्थीयों का शिविर हुआ। पहले 2 शिविरों के कुछ शिविरार्थी भी इसमे सम्मिलित हुए। इस शिविर का प्रबोधन श्री साधन भट्टाचार्य ने किया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

बुजुर्ग वार्ड में प्रबोधन के समय अड़चन आने के बिन्दुओं पर भी साथियों ने जिज्ञासा प्रस्तुत किया। शिविर के अंत में मौखिक, मूल्यांकन, शिविरार्थियों ने प्रस्तुत किया।

(i) शिविरार्थियों ने स्वीकारा कि उन्हे अपने व्यवहार व विचार में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई। इसके पूर्व ऐसी आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। यही विचार करने का कारण भी समझ में आया।

(ii) पहले अपराध ~~की दिशा~~ की दिशा में ही बड़ा कारनामा करने का विचार करते थे। कुछ लोगों ने कहा कि अब यह कामना खत्म हो गई है, कुछ लोगों कहा कि अब अपराध विचार निरर्थक लगते हैं।

(iii) लोगो ने स्वीकारा कि भौतिक लाभ के लिए ही सम्बन्ध को स्वीकारते थे, यही अपराध प्रवृति की वजह रही। अब विश्वास, सम्मान आदि मूल्यों के लिए सम्बन्ध पहचानेंगे।

(iv) सभी लोगो ने प्रतिदिन 1 या 2 घंटे शिविर रखने का अनुरोध किया।

इसके पश्चात और भी शिविर होते रहे। शिविरो में श्री अशोक धृतलहरे और ~~[illegible]~~ (साथी) के जीवन विद्या के आधार पर गीत लिखकर गाते रहे।

चौथा शिविर : 11-6-97 से 17-6-97 तक महिला बंदियों के साथ हुआ। प्रबोधक- श्री साधन भट्टाचार्य कुल शिविरार्थी - 26

पाँचवा शिविर - जेल स्टाफ एवं जेल में कार्यरत ~~क~~ स्वयंसेवी संस्था 'किरण' ~~[illegible]~~ के साथियों के साथ हुआ। प्रबोधक- श्री साधन भट्टाचार्य कुल शिविरार्थी - 24

छटवॉं शिविर 21-12-97 से 27-12-97 तक हुआ।
प्रबोधक - श्री साधन भट्टाचार्य एवं श्री बलवन्त साहू
कुल शिविरार्थी - 35 । इसमे मुख्यतः पुराने शिविरार्थियो ने शिविर मे भाग लिए
सातवॉं शिविर 26-01-98 - 30-01-98 तक
प्रबोधक - श्री साधन भट्टाचार्य एवं श्री बलवन्त साहू
कुल शिविरार्थी - 40

इसके अलावा जीवन विद्या के प्रबोधक कई अवसरो पर बिलासपुर जेल पहूँचकर मार्गदर्शन करते रहे।

20 जुलाई 98 को मध्यस्थ दर्शन के प्रणेता पूज्य नागराज जी, आ. शारदा शर्मा एवं साधन भट्टाचार्य के साथ बिलासपुर जेल मे पधारे एवं सभा मे उपस्थित सभी व्यक्तियों को शुभाशीष दिए। इस अवसर पर जेल अधीक्षक डा. के.के. गुप्ता भी उपस्थित रहे।

~~पूज्य नागराज जी~~ पूज्य नागराज जी ने विश्वास दिलाया कि गलती और अपराध के बिना जीया जा सकता है। समाधान और समृद्धिपूर्वक प्रत्येक मनुष्य जीना ~~जा सकता है~~। और परिवार का लक्ष्य है।

जेल मे निरुद्ध बंदीयों ने मिलकर निम्नलिखित शिविर किए।

दुसरा शिविर	- 24-5-97	से 31-5-97	कुल शिविरार्थी	- 18
तीसरा शिविर	- 4-6-97	से 11-6-97		- 24.
चौथा शिविर	17-6-97	से 25-6-97		-35
पॉंचवा शिविर	11-7-97	से 18 7 97		-30
छटवॉं शिविर	25-7-97	से 5-8-97		- 28

इन शिविरो मे श्री करणदास, श्री शा. सूरमाल, श्री रामानंद

तिवारी एवं श्री गणेशराम रहे।
सातवाँ शिविर 29-7-97 से 5-8-97 कुल शिविरार्थी-30
आठवाँ शिविर 5-2-98 से 13-2-98 , कुल शिविरार्थी - 34
इन शिविरों के प्रबोधक ~~[illegible]~~, श्री करणदास
श्री शामसुदयाल और श्री गणेशराम रहे।

मूल्यांकन

मध्य फरवरी 97 से अक्टोबर 98 तक बिलासपुर जेल मे निरुद्ध बंदियों के साथ ~~शिविर~~ 'जीवन विद्या' शिविर आयोजित किया गया। विगत 20 माह मे जीवन विद्या के प्रबोधको ने सात शिविर लिया। बंदी भाइयों ने 8+ = शिविर लिया। इनमे लगभग 500 से अधिक लोगों ने अध्ययन किया। लगभग 100 बंदीयो ने कम से कम 3 शिविर किया।

आज इनमे कुछ रिहा हो गये हैं, कुछ जेल से स्थानांतरित किए गये हैं एवं कई जमानत पर छूट गये है। इस समय 150 से अधिक बंदी ऐसे हैं जो कम से कम एक शिविर कर चुके है। जो बंदी लम्बे समय से जेल मे निरुद्ध हैं उन सभी पर, जीवन विद्या शिविर मे अध्ययन करने के बाद बंदीयों के श्रेष्ठ विचार व व्यवहार का प्रभाव पड़ा है।

हमने इन शिविरों ~~का मूल्यांकन~~ के परिणाम का मूल्यांकन किया। ~~इसकी आवश्यकता इसलिए महसूस हुई थी~~ शिक्षा के द्वारा लोगों मे वैचारिक (एवं भावनात्मक) परिवर्तन देखा गया, जिसका प्रमाण उनके व्यवहार मे भी देखा गया। इसलिए इसके लोकव्यापीकरण की आवश्यकता महसूस हुई जिससे प्रचलित शिक्षा के विकल्प की दिशा मे शासन, प्रशासन एवं समाजसेवी संस्थाओं का ध्यानाकर्षण हो सके। में।

यह मूल्यांकन 2 भागों मे किया गया है।

I. बंदियों द्वारा प्रस्तुत मूल्यांकन

II. जीवन विद्या के प्रबोधकों द्वारा किया गया मूल्यांकन

जेल मे निरुद्ध बंदियों द्वारा मूल्यांकन

(अ.) जेल मे हुए परिवर्तन का मूल्यांकन

1. आपसी लड़ाई-झगड़ा व मारपीट पहले होता था। अब न के बराबर है।
2. पहले गाली-गलौच एवं एक दुसरे की शिकायत होती रहती थी अब नहीं होता।
3. एक व्यक्ति अपने नहाते वक्त दुसरों को पानी नहीं देता था यदि धोखे से कोई नया आदमी पानी ले लेता था तो उसे बहुत बुरी तरह मारा जाता था। अब ऐसा नहीं होता है।
4. रिहा होने वाले बंदियों से उसके सारे सामान (जूता, चप्पल कपड़ा आदि) छीन लेते थे। अब ऐसा नहीं होता है।
5. मुलाकात मे आए हुए सामान को गेटकीपरो द्वारा बलपूर्वक छीन लिया जाता था। अब ऐसा नहीं होता है।
6. बैरक इन्चार्जो ~~का~~ (राइटर्स) का एक स्पेशल सण्डास होता था। अब ऐसा नहीं होता है।

(ब) जेल अधिकारीयों व कर्मचारीयों का मूल्यांकन

1. आजकल जेल अधिकारी व कर्मचारी बंदियों से अपने सम्बन्धियों की तरह व्यवहार करते हैं।
2. मुलाकात ~~के सामान~~ मे मिलने वाले सामान मे अब हेराफेरी नहीं होता है।
3. पहले ~~*~~ प्रत्येक बैरक मे सप्ताह मे 2 बार तलाशी होती थी अब ऐसा नहीं होता है।
4. पहले प्रत्येक 15 दिन मे बंदियों का बैरक बदल दिया जाता था, अब ऐसा नहीं होता है।
5. पहले बंदियों को दिन मे भी अधिकांश समय बैरक मे बंद करके रखा जाता था। अब ऐसा नहीं होता है। अब दिन के अधिकांश समय बैरक खुला रहता है। बंदी स्कूल मे जा सकते है एवं

कई कार्यों को सीखने की छूट है।

6. पहले छोटा सा कागज रखना मना था, अब पुस्तक व कापी रख रहे हैं।

7. पहले जेल कर्मचारी व अधिकारी केवल राइटर्स (बैरक इन्चार्ज) पर विश्वास करते थे। अब सभी बंदीयों पर विश्वास किया जाता है।

(ख) बंदियो द्वारा प्रस्तुत स्वयं का मूल्यांकन

मानव संचेतना शोध संस्थान द्वारा मूल्यांकन

यह मूल्यांकन जीवन विद्या का अध्ययन किए हुए बंदीओं अन्य बंदी जो शिविर नहीं किए है, जेल मे कार्यरत स्वयं सेवी संस्था 'किरण' के साथी, जेल में कार्यरत कर्मचारी व अधिकारीयों, जेल से रिहा कैदीयों से चर्चा एवं स्वयं नीरीक्षण के आधार पर किया गया है।

जेल मे पहले बंदी लोग लड़ने-भिड़ने मे समर्थ दादा लोगों का सम्मान करते थे। अब जेल में जीवन विद्या प्रबोधको और सही आचरण करने वाले व्यक्तियों का सम्मान होता है। इसलिए दादागिरी द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने का अवसर एवं पुराने बंदियों मे प्रवृत्ति शुन्यप्रायः हो गई है। नये बंदी जल्दी ही इस वातावरण से प्रभावित हो, स्वीकारने लगे हैं।

पहले अधिकांश बंदियों को यह स्वीकृति थी कि हमसे अधिक बड़े अपराधी बाहर घूम रहे हैं, अधिक अधिकार सम्पन्न पदों पर भी विराजमान हैं। अतएव हम लोग भी जेल से रिहा होने के अधिकारी हैं। वे विद्रोही भावना व विचारो से भरे रहते थे। इसी के साथ प्रत्येक बंदी अन्य बंदी को बदमाश व अपराधी मानता था। यह मान्यता भी प्रचलित थी कि ये सभी बदमाश ही रहना चाहते हैं, सुधरना नहीं चाहते है। सुधर सकते भी नहीं हैं। इसलिए कैदी अन्य कैदीयो से घृणायुक्त व्यवहार करते थे।

जीवन विद्या से गुजरने के बाद बंदीयों के विचार मे आमूल-चूल परिवर्तन हुआ है। उन्हे यह बोध हो गया है कि सभी मनुष्य मे जीवन क्षमता समान है। सभी मनुष्य सुधरा हुआ रहना चाहते हैं। परन्तु आज तक मानव समाज में सही आचरण व ज्ञान का निश्चयन ही नहीं हो पाया इसलिए मूल्यांकन भी नहीं होता है। इसलिए सभी समझदार होने के लिए सही शिक्षा आवश्यक है।

कुछ लोग इसमे भागीदारी की मानसिकता को बना पाए हैं। शेष बंदी इसमे सहमत हैं। सभी बंदियों में एक दुसरे के प्रति संवेदना बढ़ी है।

बंदीयों को यह विचार स्वीकार हुआ है कि 'मानवीयता पूर्ण आचरण' करने से परिवार, समाज एवं शासन-प्रशासन का कोई दबाव नहीं होता है बल्कि उन सभी की पूरकता होती है। स्वयं में भी अन्तर्द्वन्द से मुक्ति हो जाती है। जब तक परधन, परनारी / परपुरुष व परपीड़ात्मक व्यवहार करेंगे तब तक लोग अविश्वास करेंगे और दबाव डालेंगे।

बंदियो और जेलकर्मचारीयों के बीच पहले काफी अविश्वास था फलतः एक दुसरे से भय होता था। अब कुछ बंदियों के आचरण मे निश्चयता आने से परस्पर बंदियों में विश्वास स्थापित हुआ है ~~अधिक~~, जेल कर्मचारी व अधिकारी भी आश्वस्त हुए हैं"।

~~पहले~~ जेल अधिकारी यह स्वीकारते हैं कि "जेल से बाहर होने पर भी जेल के भीतर कोई अनिष्ट घटने के विचार हमे पीड़ीत रहते ~~करते रहते~~ थे। अब इसमें काफी कमी आई है। हम लोगों का मानसिक तनाव कम हुआ है। बंदियो के प्रति हमारे सकारात्मक विचार में काफी वृद्धि हुई है।"

बंदी शिविरार्थीयों में अधिकांश लोगों का पढ़ने लिखने का पुराना अभ्यास नहीं था फिर भी सभी शिविरार्थी लगातार 5 घंटे तक बैठकर अध्ययन मे रत रहे। अध्ययन के बीच मे प्रावधानित 10 मिनट के अवकाश का उपयोग भी जिज्ञासा और समाधान के लिए होने लगा। पूरे समय तक शांति के साथ अध्ययन कार्य चलता रहा। ऐसा लगता था कि सभी जीवन विद्या के प्यासे हैं और इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

शुरु मे शिविरार्थी आजकल प्रचलित अव्यवस्था।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

और भ्रष्टाचार पर प्रश्न पूछते थे। धीरे-धीरे उनमें 'जीवन', सह-अस्तित्व, सुखी रहने के लिए आस्तित्व सहज व्यवहार, व विचार एवं नियमों पर जिज्ञासा स्पष्ट होने लगी। समझे गये मुद्दों का मुखरण, एक दुसरे को सुनने व समझने की प्रवृत्ति में विकास दिखने लगा। जबकि पहले दुसरे व्यक्ति की बातों को अनसुनी करना, काटना या विरोध करना परिलक्षित होता था। इस अब मुखरण से। शिविर स्थली में ही परस्पर मानवीय संबंधो के रुप में पहचान व निर्वाह होने लगा।

स्वायत्त सुधार गृह

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार आज के संक्रमण काल मे कारागृह का सदुपयोग शिक्षापूर्वक बंदीयों को समझदार व स्वावलंबी बनाने के लिए किया जाए जिससे कारागृह स्वयं स्वायत्त सुधार गृह बने।

उद्देश्य :- (i) बंदियो मे न्याय व व्यवस्था मानसिकता स्थापित करना एवं ऐसा करने के लिए अपेक्षा रखना।

मानवीय शिक्षापूर्वक (ii) जेल प्रशासन स्वयं सुधारक के रूप मे प्रमाणित रहना।

(iii) सरकार पर आर्थिक बोझ को क्रमशः कम करते हुए शुन्य पर लाना।

इनमे बंदीयों को तीन आयामों मे शिक्षित करने का कार्यक्रम रहेगा।

1/ शिक्षा - संस्कार - प्रत्येक बंदी मे जीवन व अस्तित्व की समझ, सह-अस्तित्व मे पूरकतापूर्वक जीने की अनिवार्यता, एवं सुखी रहने के लिए अनिवार्य नियमों की समझ को सुनिश्चित किया जाना है। जिससे प्रत्येक बंदी मे - स्वयं के प्रति विश्वास एवं श्रेष्ठता के प्रति सम्मान हो, विचार शैली व आचरण मे संतुलन हो। इसके उपरान्त व्यवहार मे सामाजिक एवं व्यवसाय मे स्वावलंबी होने के लिए स्वयं स्फुर्त इच्छा का उदय होता ही है।

11/ स्वास्थ्य संयम - प्रत्येक बंदी मे शरीर व्यवस्था, जीवन और शरीर मे सम्बन्ध, जीवन का शरीर पर प्रभाव एवं स्वस्थ रहने के अनुकूल आहार एवं विहार (स्वच्छता, व्यायाम, आसन.) की समझ को स्थापित कर अभ्यास के लिए निष्ठा पैदा करना।

शरीर अस्वस्थ होने पर प्राथमिक उपचार, सामान्य क्रियाओं एवं घरेलू जड़ी-बूटियों व वस्तुओं द्वारा ठीक करने का प्रशिक्षण देना।

III/ <u>उत्पादन कार्य</u> :- प्रत्येक बंदी (विचाराधीन बंदी भी) को कोई उत्पादन व सेवा कार्य का प्रशिक्षण देना एवं निपुणता-कुशलता प्राप्त होने तक अभ्यास का अवसर देना।

निपुणता-कुशलता प्राप्त होने के उपरान्त, बंदी के श्रम ~~के श्रम~~ का मूल्यांकन कर, बंदी का व्यय घटाकर, शेष राशी बंदी को उपलब्ध कराना। यह राशी बंदी की इच्छानुसार परिवारजनों को या रिहा होने पर बंदी को दिया जाए।

आचरण मे मानवीयता का मूल्यांकन होने तक शिक्षित करने का प्रावधान रहेगा।

शिक्षित होने के उपरान्त खुले जेल मे भेजकर ~~खुले जेल मे भेजकर~~ पुनः समाज में जीने के लिए पूर्व तैयारी कराया जाएगा। इस अवधि मे उत्पादन मे प्रवृत्ति, सेवा, व्यवहार मे न्याय, स्वास्थ्य संयम एवं शिक्षण कार्य मे भागीदारी का मूल्यांकन किया जाएगा।

खुले जेल मे अपेक्षित आचरण प्रमाणित होने के बाद बंदी को यह अवसर दिया जाएगा कि जिनके साथ पूर्व में अपराध घटित हुआ था उन्हें अपने सुधार आचरण का विश्वास दिलाए। इस चरण मे सफल होने पर बंदी को सुधरा घोषित करने और सजा मुक्त करने के लिए संवैधानिक प्रावधान सुनिश्चित करने की व्यवस्था रहेगी।

इसके लिए 5 चरण मे योजनाएँ हैं:-

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1. बंदियों को 'जीवन विद्या' का अध्ययन कराना
2. जेल प्रशासन एवं बंदी मिलकर बिलासपुर जेल में मानवीय शिक्षा के दायित्व को निर्वाह करना
3. अन्य जेलों में ~~यही~~ उपरोक्त दोनो चरणों को पूरा करना
4. खुले जेल के प्रावधान को सुनिश्चित करना
5. जेल प्रशासन, बंदी, बंदी द्वारा आहतपरिवार, न्यायलय एवं शासन की स्वीकृति से बंदी को सुधरा घोषित कर सजा मुक्त करना।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 27-12-97
27-12-97

जीवन विद्या

रामेश्वर वल्द बोधीराम पटेल

जीवन और शरीर मे दोनो मिलकर समाज और परिवार के प्रति व्यवस्था — जीवन और शरीर को देखते हुए जीवन विद्या के अनुसार बताया गया उसी के अनुसार मैं अपने शरीर के साथ विश्लेषण करते हुए प्रकृति के साथ आहर, विहार करते हुए मै अपना जीवन और मेरे शरीर के अनुभव से जीवन का शेष भाग भोगना एंव प्राप्त करना चाहता हूं।

रमेश्वर
27-12-97

Date
17-12-97

जीवन विद्या

इन्द्र दुबे
S/o जगन्नाथ प्रसाद दुबे

जीवन और शरीर मैं दोनो मिलकर समाज और परिवार के प्रति व्यवस्था : जीवन और शरीर को देखते हुऐ जीवन विद्या के अनुसार बताया गया उसी के अनुसार मैं अपने शरीर के साथ विश्लेषण करते हुऐ प्रकृति के साथ, अहार, विहार करते हुऐ मैं अपने जीवन और मेरे शरीर के अनुसार अनुभव से जीवन को शेष भाग भोगना एवं प्राप्त करना चाहता हूँ।

रहसलाल ग्राम बिनौका मसतुरी थाना पेसद्
अपेरवर जिला बिलासपुर (म॰ प्र॰)

१ दिन के शिविर अच्छा लगा

२ सुख से रहने की विधि समझ पा नही
पाया सीमीत शरीर जीवन मानव मैं
हूँ शरीर मेरा साधान है
मैं जीना चाहता हूँ शरीर का साधन है
तरह उपयोग करना चाहता हूँ
मै सुख से जि ना चाहता हूँ
मैं निरतर सुख से जिना चाहता हूँ।

३ माता पीता
पुत्र पुत्री भाई बहनी गुरू शिष्य
पति पत्नी

४ स्वयम मे जीना समाज मैं जीना। शरीर
मैं जीना पकृति मे जीना
परिवार मैं जीना अस्त्त्य मैं जीना

५ आहार। अवास। अलंकार
दूरश्रवण। दूरदर्शन। दूरगामन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

11

जीवन विद्या

इस शिविर से हमें जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला और ऐसी ही छोटी-छोटी बातें हमारे जीवन में मार्ग दर्शन दे सकते हैं। हमें आशा है कि हम जीवन में जो कुछ करना है, उचित ही करें जो हमें निरर्थ न लेना पड़े, और न ही सोचना पड़े। जो कुछ भी करना हो सोच समझ कर कार्य करें। इस शिविर में मुझे बहुत अच्छा लगा। ताकि हम और

श्रोता भाईयों को इस जीवन
के बारे में उन्हें समझायें,
ताकी उन्हें भी कुछ ज्ञान
की प्राप्ति हो, यही मेरी
हमारी कामना है।

प्रमोद कुमार गुप्ता
आदर्श [illegible] जिला जेल
बिलासपुर (म.प्र.)
वार्ड नं.- 7.

जिला जेल के अन्दर

जीवन विद्यालय शीवीर में

(1) शीक्षक कि आधार पर मुझे बहुत सी बाते की ख्याल आया पहले हमे जिवन विद्या के बारे मे कोई रास्ता नही मिलता था इस लिए हम दुखी थे लेकिन अब हमे अनुभव होता है कि हम आगे चलकर अपने आप मे शुख से जीने की अवस्था निस्चय ही कर सकेगे ये मुझे पुर्ण आशा होगया। सीविर मुझे अच्छा लगा।

और आगे चलकर। शिवीर से

(2) हम अपने जुम्मे दारी से परिवार के साथ मेल मिलाकर सुख सान्ति से जी सकेंगा ये मुझ पर समझ आया इसी तरह समाज मे भी जी सकुंगा

मैं श्यामचन्द हुँ खजरानी निवासी जैजैपुर थाना

दिनांक 27-12-97

(३५)

श्रीमान गुरु जी जीवन विद्या शिविर जिला जेल बिलासपुर (म० प्र०)

नमस्ते

① शिविर मुझे अच्छा के सावार अती आनंद लगा

② वयहार मे तुलन करन का जारी

③ आगे के लिये मैं जिवन विद्या के अनुसार जिवन कसात उपया

⑤ जिवन विद्या मैं मुझ जानकारी तुलन विसलेषण किया के अनुसार ताल मिल बनाउ और निरंतर सुख प्रप्त करन

नाम अशोक कुमार
कतल हर

स्वयं के मुल्यांकन

① शिविर अच्छा लगा सुनने में
② सुख से जीने के लिये समझदारी है
③ व्यवहार में सुधार हो रहा है
④ आगे के लिये मैं जीवन में जीवन विद्या के अनुसार जीने का प्रयास करूंगा
⑤ जीवन विद्या में मुझे जानकारी हुआ

हेमासिंह

दिनांक
26-12-96

जीवन विद्या प्रशान

(1) शिविर अच्छा लगा बारालता मे
माता पिता की ओर से मे
सुख पाने चहाते हू
मुस्ली शिकमी साई आया मे
सब को भाई भाई
(2) मेरको जिवन विद्या
अच्छा लागे और मेरे को
शिशनिका लगो और
गांव में डाकर मे
बसते वाले भाई को मे
शिवाभि मे भी सिखा पाउगी
(3) व्यावहार में सब को
मिठा मिठा पियार बोल
कार में व्यवहार पियार
में व्यावहार बनाउगा
धन्यवाद

(4) शिविर उपस्थित लोगों बारे में
बाडू भाई को पता नाम
छोटा भाई को
धन्यवाद

(5) श्री मान गुरुजी की
शियनि बात सुन कर
गुरुजी को पढ़ना मिले
जेल से निकाल कर
मैं गांव वाले को मैं
भी शियानि का बात
पियार से शियनि का
बात सिखलाउगां

नाम भागवत प्रसाद पात्रे ग्राम
टी ठला डीह पोस्ट तखतपुर
तहसील तखतपुर थाना तखतपुर
जिला बिलासपुर (म० प्र०) का हू

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(2) (3)

मेरा पता
चिन्तामणी ग्राम व॰ पो॰ मालूखोंदरा
थाना लालपुर तसील लोरमी जिला
बिलासपुर (म॰प्र॰)

तो जीवन को सुधार कर रखे तो
ज्ञान और मान होगा और शरिर
को साधन नहीं रखेंगे तो कहा से
जीवन चलेगा। ये शरिर को मनमा-
मानी रखने से शरिर को दुख होता
है। हमारे शरिर में स्वतंत्रता रखे
जिसका आचरण खराब है उसकी
मानव को पागल समझते हैं
तो पागल नही बनना है अपना
जीवन को व्यावस्था से रखना
ठीक है। निसचित ये रखना है
या भाव और सनमान से
चलना है। तो जिवन विद्या
का एक एक सब्द मे बहुत
से करतव्या है। माने इसमे
जीवन के लिये अमृत भरा हुवा है।

तो मैं इतना लिख दिया और एक सब्द
का अनेक सब्द है तो मैं/आप को नमस्ते

दिनांक 27-12-97

हमारे गुरु महाचार्य एव साधु गुरु जी को (1)

~~शिविर~~ अच्छा लगा।

जीवन विद्या

(1) मै क्या चाहता हूं ? उत्तर है
मै दुनिया को देखना चाहता हू
(2) उसे पाने क्या उपाय है उत्तर
मै सुख चाहता हूं
शरिर के लिये अहार होना
अवास है चाही तो जीवन सुखी रहेगा।
मानव में इतना सुख है
(1) शरिर के लिये क्या साधन है
स्वच्छ रहना या धुम्रपान से
बच कर रहना है सोत मे चलना है
क्या स्थति से गुजरना है
अपना मन को एक रखना है
और सब से प्रेम बनाना है
और सब भाई भाई मिल जुल कर
रहना है। और निती से व्यावहार
करना है माने सुमती ~~सीखना~~ है

दिनांक 26/12/96 देहीलाल वसन्तकार

प्रश्न : शीविर अच्छा लगा बुरा लगा

उत्तर : अच्छा लगा ।

प्रश्न : व्यहार में सुधार हुआ या नहीं यदि हुआ तो क्या

उत्तर : हुआ जो हम नहीं जानते थे सब जान लिये

प्रश्न : सुख से रहने की विधि समझे या नहीं

समझ गये सब से ताल मेल रहे

प्रश्न : आगे अच्छी तरह जीने का संकल्प हुआ या नहीं ।

उत्तर : संकल्प हुआ पुरी तरह से घर परिवार में जीने का

प्रश्न : जीवन विद्या की मोटी मोटी बात जो आप समझ पाये अपने शब्दों में बताये

उत्तर : जीवन विद्या से जो आदमी समझ गया है वह जीवन से कभी धोखा नहीं खाता इसमें जीवन और शरीर के बारे इत्यादि सब चीज के बारे में बता दिया है अगर इसमें जान बुझ कर धोखा करेगा तभी धोखा होगा नहीं तो एसा कभी नहीं होगा जीवन विद्या होना चाहीये 3 दीन का

दिनांक 26/12/96

दिनांक
27-12-97

श्री मान परम पुज्यनिय गुरु जी
जीवन विद्या शिविर
आदर्श जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

प्रणाम

मै अपने भाई कि मर्डर करके 302 के धारा के तहत 7-12-96 को दिन शनिवार को जेल आया तो मुझे जेल में मै दुखी रहता था जेल में जीवन विद्या शिविर लगा तो मैं सभी शिविर में भाग लिया और आपने श्री करण गुरु जी को श्री मानवव्यवहार दर्शन पुस्तक दि है उसी को मै अपने रजीस्टर में उतार कर नित्य अध्ययन करता हु और श्री करण गुरु जी ने जेल में जितने शिविर लगाया उसमे मै सभी शिविर मे भाग लिया तो जो मेरे पास दुख था ओ मुझसे सदा के लिए

छोड़ दिया है मैं अब सुखी होगया हुं सुख
तो मेरा धर्म है और मेरे पास जो भाई
रहते हैं वो भी अपने आप को सुखी
अनुभव करता है।

मैं श्री साधन भक्ताचार्य श्री
गनेशबागड़िया को गुरु स्वीकार लिया हुँ
मेरा जीवन का लक्ष्य किया है उसको
बताने वाला तो आप है। मैं जहा भी रहु
मैं आपको दोनो चरण वन्दना करता हुं।
आप मेरे ऊपर हमेशा दया कृपा करुणा
स्नेह किये रहें।

और मैं श्री ए. नागराजको
अपने स्वीकार कर लिया हुँ मेरे को
ऐसा लगता है कि पूरे विश्व ~~को सारे~~
के सभी मानव को सुख शान्ति सन्तोष
आनन्द से रहने वाला ज्ञान को

लाया है मैं जेल में रहु या बाहर मैं जीवन विद्या को निरंतर रखता रहूँगा इसके सिवाय मुझे कोई चीज मे मन नही लगता है।

(1) शिविर अच्छा लगा।

(2) सुख तो मेरा धर्म है।

(3) व्यवहार मे सुधार हो रहा है।

(4) आगे के लिये मेरा (4) शक्ति संकल्प मे संकल्प कर लिया हु कि संकल्प के हिसाब से इच्छा इच्छा शक्ति के हिसाब से विचार हो विचार के अनुसार शरीर मे क्रिया हो।

मैं शनिवार को जेल आया और पहला शिविर भी शनिवार को लगा तो मे हर शनिवार को बाबा जी के नाम से अपने इस जीवन मे इस शरीर के रहते तक मै उपवास

रहुंगा। ये मैं संकल्प कर लियाहुँ।

मैरे को जो ज्ञान प्राप्त हुआ है जो इस प्रकार है स्वयं से रहताहुँ ये जीवन के लिये है शरीर को स्वास्थ्य रखताहुँ जीवन के स्थिति मे जीता है स्वयं में अभाव शरीर के साथ जबाबदारी को निभाते हुए परिवार मे, समाधान, भौतिक, समृद्धि समाज मे समाधान भौतिक समृद्धि अभय, प्रकृति में समाधान भौतिक समृद्धि अभय सह अस्तित्व। ~~जीवन ज्ञानावस्था को संस्कार जीव अवस्था को~~ पदार्थ परिणाम अनुसंगी, प्राण, बीज अनुसंगी जीव अवस्था वंश अनुसंगी ज्ञानअवस्था संस्कार अनुसंगी अस्तित्व मे केवल चार अवस्था है पदार्थ अवस्था के धर्म अस्तित्व प्राण अवस्था के धर्म अस्तित्व पुष्टि जीव अवस्था के धर्म अस्तित्व पुष्टि जीने कि आशा ज्ञान अवस्था के धर्म अ[स्तित्व] पुष्टि जीने कि आशा सहित सुख है पदार्थ अवस्था के धर्म प्राण अवस्था में समाहित है पदार्थ प्राण अवस्था

5 के धर्म जीव अवस्था मे समाहित है व्हाथी
अवस्था प्राण अवस्था जिव अवस्था के धर्म
ज्ञान अवस्था मे समाहित है।
मानव सम्बन्ध 7 प्रकार है 7 सम्बन्धो मे
18 मूल्य है
(1) अस्तित्व मे सह अस्तित्व मूल्य है (2) जीवन मे
सुख. शान्ति सन्तोष आनन्द मूल्य है।
(3) मानव मे धीरता विरता, उदारता, दया, कृपा,
करुणा मूल्य है। (4) समाज मे समाधान
समृद्धि अभय सह अस्तित्व मूल्य है।
(5) वस्तु मे उपयोगिता और कला मूल्य है।
मानव (5) प्रकार के होते है 1 राक्षस मानव (2) पशु
मानव (3) मानव (4) देव मानव (5) दिव्यमानव
राक्षस मानव मे क्रूरता प्रधान है ~~मानव~~
पशु मे दिनता प्रधान है मानव मे न्याय प्रधान
है देव मानव मे पराबल प्रधान है।

द्रव्य मानव में सत्य प्रधान है।

पशु पक्षी आहार निद्रा भय प्रजनन क्रिया को समय-समय में नियम से करता है।

मनुष्य आहार विहार निद्रा प्रजनन क्रिया को समय वे सम्मोहनीय से करता है।

मात्रा शरीर पक्ष में होती है फिर जीवन पक्ष में होता है।

नियम ही न्याय है न्याय ही धर्म है धर्म ही सत्य है।

शरीर के लिये मानवीय मूलक स्वराज्य लक्षण है जीवन के लिये ~~[illegible]~~ विश्राम लक्षण है।

जब तक रहाई है तब तक क्रिया है जब तक क्रिया है तब तक भ्रम है तो विश्राम कहा है

~~[illegible]~~ ~~को~~

जीवन जानना, मानना, पहचान

को अकेला करता है निर्वाह करना को शरीर और जीवन दोनो करता है

प्रारब्ध या भाग्य जानना, चाहना करना, भोगना ये चारो से भाग्य बनता है। संस्कार हि भाग्य है।

• रिश्ता सम्बन्धो पहचान कराना हि रिश्ता है।

प्रकृति मे अव्यवस्था के कारण मनुष्य है इसका फल पदार्थ के दुर्पयोग से मनुष्य को फल कई वर्षो मे मिलता है जैसे आज वायु गैस कारखाना द्वारा अवस्था के दुर्पयोग से कुछ वर्षो के बाद मिलता है जैसे आज आजकल पड़ना जीवा अवस्था के दुर्पयोग से मनुष्य को फल कुछ दिनो के बाद जैसे भेड़ बकरी के,

खाने के से आदमी को शेर खा जायेगा।

मनुष्य मनुष्य के साथ झगड़ा का परिणाम का कारण ततक्षण जैसे आज जेल आये है

सत्ता को हम शुन्य, व्यापक, पारदर्शी, पारगामी अखंड, पुर्ण अनादि, ऊर्जा नियंत्रण के नाम से

ईश्वर समझते है

सम्पृक्त हुआ दिया जिया प्रकृति 4 अवस्था पदार्थ, प्राण जीव, ज्ञान, को अनन्त इकाई के रूप मे समझते हैं।

मै सम्भूकपाल भास्कर ग्राम गेण्डुगाँव पो० आ० बरमपुर तह० कोरबी जिला बिलासपुर म०प्र०

आप का शिष्य

जीवन विद्या प्रश्न

प्र० ① जीवन शिविर अच्छा लगा बुरा लगा

उत्तर ① इस शिविर के अन्तरगत मुझे जीवन की मार्ग दरशन मिला और यह शिक्षा प्रप्तता हुवा की जीवन से शिक्षा की ज्ञान मुझे अच्छा लगा।

प्रश्न ② सुख से रहने की विद्या

उत्तर ② मुझ इस मानव सुख के लिए सबसे पाहले ज्ञान या शिक्षा की रखना है तभी हम इस मानव जीवन को सुख से रखा सकते है।

प्रश्न ③ व्यवहार में सुधार हुआ

उत्तर ③ मुझे इस मानव जीवन मे जीने के लिए हमें एक दुसरे से तालमेल रखे या फिर या एक दुसरे मुल्यकन कर अपने से बाड़े को मान सामन देना ही मानव जीवन की सुधार या शिक्षा प्रप्तता हो तभी हम मानव जीवन को सधार व्यवहार मे जी सकते है।

और अब मैं अपने आप को गुस्सा एवम् जल्बी मैं कोई भी कार्य सोच विचार से करता हर मानव का सामन्य मे शहुजा कोनी बुरे शिक्षा की शास्वत शिक्षा ग्रहण करता यही सुधार है

प्रश्न ④ आगे अच्छी तरह जीने का सकल्प हुआ या नही।

उत्तर ④ मानव जीवन मे सबसे पाहले मे शिक्षा होना चाहीये फिर किसी भी तरह से अपने जीवन न्याय या अन्याय को निर्वाह करना या सामझदारी रखना या स्वयं मे शरीर जीवन मे सकल्प होना की कार्यालय परिवार या सामज को की निरक्षण करना है या आगे आने वाला समय को निरधारीत रखना ही जीने का सकल्प है।

प्र० ⑤ जीवन किया की सारी श्रोते जो आप समझ पाये अपने शब्दो मे बताये

उत्तर ⑤ मानव जीवन मे सबसे पाहले शिक्षा प्राप्त करना और शरीर जीवन को किसी को इस मानव शरीर को किसी अनीत का प्रनय रुप से संचालन रखना

② बाद हमें इस मानव शरीर को जीवन में
जीने के लिए शिक्षा प्राप्त होने के बाद हमें
समाज परिवार को अच्छा प्रकार की व्यवस्था
करके रहना है। तभी हम जीवन की विधी
मे मानव शरीर को चला सकते है!

जीवन विद्या शिविर

दिनाँक
२७।१२।९७

नाम महेन्द्रसिंह उइके -
पिता श्री कल्यानसिंह उइके
मुकाम बिलासपुर - कुरहरिया
थाना - पसान
तहसील - कटघोरा
पोस्ट - पाली
जिला - बिलासपुर
(म०प्र०)

उत्तर

7 दिन के शिविर अच्छा लगा
2 सुख से रहने की विधि समझ पा नहीं पाया सीमीत शरीर जीवन मानव में हूँ शरीर मेरा साधान है
मैं जीना चाहता हूँ शरीर का साधन है तरह उपयोग करना चाहता हूँ
मैं सुख से जिना चाहता हूँ
मैं निरतर सुख से जिना चाहता हूँ
3 ~~[illegible]~~ जीवन ~~[illegible]~~
माता पीता पुत्र पुत्री भाई बहनों गुरु शिष्य मित्र-मित्र। साथी सहयोगी पति-पत्नी
4 स्वयम मे जीना समाज मे जीना। शरीर मेंजीना प्रकृति में ~~[illegible]~~ जीना। परिवार मेंजीना अस्तित्व में जीना

5 आहार । आवास । अलंकार
दूरश्रवण । दूरदर्शन । दूरगमन

उच्चारण ग्राम कुप्पुरताल थाना
लालपुर पो लालपुर तसील लोरमी
जिला बिलासपुर

27/12/96
26/12/96

जिवन विद्या शिवर

शिवरामसेन - नागवंशी

जिवन और शरीर मे दोनों मिलकर समाज और परिवार के प्रति व्यवस्था - जिवन और शरीर को देखते हुए जिवन विद्या के अनुसार बताया गया उसी के अनुसार मैं अपने शरीर के साथ विश्लेषण करते हुए प्रकृति के साथ, अहार विहार करते हुए मैं अपना जिवन और मेरे शरीर के अनुभव से जिवन को बोध भोग भोगना एवं प्राप्त करना चाहता हु

शिवराम सेन - नागवंशी

भागवत प्रसाद s/o गुरुदास
ग्राम० भीमलीकापा
पो० - धुमा (सोंठीपुर)
त० कोटा
जिला बिलासपुर
पि० 495113 म.प्र.

व्यवस्था → शिक्षा, स्वास्थ्य संयम, न्यायसुरक्षा, उत्पादन कार्य विनिमय कोष (पूर्ण विनिमय)

समाज → हर व्यक्ति हर तरह से संबंधों में विश्वास से जिया जा सकता

सत्य - (सह अस्तित्व)

जी सकने लेना, जीने के सफल होना, प्रयोजन सहित और दूसरों का पहचानना, यह मानव की गरिमा है, यही मानवाधिकार का मूलतत्व हो।

मानवाधिकार के इसके उपयोग है कि इसी के आधार पर यदि सोचा जाए तो न्याय, धर्म और सत्य को समाधान के रूप में किया जाए इसके बोध कराना ही मानवाधिकार का उद्देश्य है।

1. समानता - जीने के आधार
2. स्वतंत्रता
3. स्वराज्य

(4) न्याय
(5) धर्म
(6) सत्य

मानव में कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता है। इसका तृप्ति बिंदु पाना है

स्वराज्य → न्यायपूर्वकता, उत्पादनपूर्वक विनिमय पूर्वक

शिक्षा संस्कार एवं स्वास्थ्य संयम

न्याय
जीवन मूल्य → सुख, शांति, संतोष, आनन्द
— मानव मूल्य → धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा
— स्थापित मूल्य → कृतज्ञता, गौरव, — 9 मूल्य - राष्ट्रीयता का प्राण
शिष्ट मूल्य — सौम्यता - - - (——)
व्यवसाय मूल्य — उपयोगिता, कला

30 मूल्य

→ इन (18) मूल्यों का अनुभव व अभिव्यक्ति न्याय है।

प्रश्न ① — जेल के बाहर में और जेल में जब आये तब क्या लगा और धीरे-धीरे क्या परिवर्तन हुआ ?

व्यवहार में — हमारे द्वारा
— हमारे साथ

प्रश्न ② जीवन विद्या के बाद —

(अ) दूसरे आपके साथ जो व्यवहार करते थे

(ब) एवं आप दूसरों के साथ जो व्यवहार करते हैं। इसमें कौन सा श्रेष्ठ है और क्यों ?

(स) व्यवसाय और पद, धन, यश, रूप प्राप्ति में —

प्रश्न ③ जब झगड़ा-झंझट नहीं हुआ था, तब और आज आपको कैसा लगता है।

① स्वयं के मूल्यांकन में —

② व्यवसाय के बारे में —

③ व्यवहार में दूसरों के द्वारा —

④ अपने द्वारा किये हुए व्यवहार में —

⑤ दूसरों के मूल्यांकन करने में (आपके द्वारा)

प्रश्न ④ अभी क्या कमी लगती है।

① व्यवसाय में

② व्यवहार में

प्रश्न ⑤ जीवन विद्या से क्या-क्या समझे —

① स्वयं के बारे में

② शरीर के बारे में

③ परिवार व्यवस्था में

④ समाज व्यवस्था में

⑤ प्रकृति व्यवस्था में

⑥ अस्तित्व व्यवस्था में

प्रश्न ⑥ बाहर, यदि निकल जाएं तो क्या-क्या कार्य करेंगे ?

प्रश्न ⑦ ~~अभी~~ आप क्या-क्या चाहते हैं।

उत्तर① जेल के बाहर अच्छा लगता था, क्योंकि विभिन्न प्रकार से व्यवस्था थी तथा घूमने - फिरने की भी आजादी थी। तथा मान भय बहुत ज्यादा ही था इसलिए मैं गलती करता नहीं था। और जेल में जब आये तब बहुत ही बुरा लगा क्योंकि जेल के अपना एक अलग ही भाषा था जैसे - रे, बे, ... इत्यादि और धीरे - धीरे परिवर्तन हुआ कि, ~~एक~~ पहला दिन जेल आये, दूसरे दिन मुलाहिजा पर रहे, और तीसरे दिन टेलर कमान गया (दर्जी काम बाहर से जानता था) तथा उसी दिन (तीसरे दिन) टेलर कमान के नम्बर दार को साथ रखकर अपने पूरे कुनबा वालों के पास पहुँचकर बैरक के रायटर व नम्बरदारों का कह दिये कि अमुक - अमुक आदमी अपना है किसी भी प्रकार से इन्हें कष्ट नहीं होना चाहिए फिर दो या तीन दिन में उस बैरक में पहुँच जाता था जिसमें मेरे केस वाले रहते थे।

व्यवहार में - हमारे द्वारा —— शारीरिक क्षेत्र में जो काम कहे वे सब काम किये। झाड़ू लगाना, आदि

हमारे साथ —— रुपये मगाने के लिए अनेकों प्रकार से तंग किया गया, जैसे — लटकते हुए लट्टू के (बल्ब) के निचे सुलाना झाड़ू - खरहट्टा लगवाना (मारकंडर से दो दिन झाड़ू लगाया था) रोटी के लिए लाइन लगाने से, - चाँवल लो कहकर गाली देते, जब चाँवल के लिए लाइन पर लगने से, रोटी लो कहकर गाली देते, आदि - आदि।

~~किन्तु~~ ~~दिनांक 2-1-97 को~~ दिन प्रति दिन पहचान बढ़ने लगा फिर उपरोक्त प्रक्रिया सारा के सारा ठीक होते चला गया।

दिनांक 2-1-97 को आदर्श जिला जेल घोषित हुआ फिर पहले बार जेल आने वालों के लिए स्वागत केन्द्र बना। आज उनके साथ मानवीयता पूर्ण व्यवहार से स्वागत किया जाता है।

उ② माननीय कमिश्नर साहब, माननीय कलेक्टर साहब (भलानी जी) माननीय डॉ. के. के. गुप्ता जी के द्वारा दिनांक 15-2-97 को जीवन विद्या शिविर श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी से आयोजित किया गया। ~~—~~

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या के बाद –

(अ) दुसरों के मेरे साथ शुरू-शुरू पुरानी हरकतें करते थे. जैसे - पानी लेने के लिए लाइन में लगने से बाद मेरी बारी आने तो भी दुसरों के द्वारा बाल्टी लगाकर पानी ले लिया जाता था, और मैं चुप-चाप देखता रहा, पर एक भी शब्द कुछ नहीं बोलता, उन्हीं में से कोई न कोई उन्हें रोकता ही था, आज पूरे प्रक्रिया ठीक हो गया दुसरों के द्वारा मेरा जरा सा भी समय नष्ट नहीं किया जाता है बल्कि, वे लोग अर्थात दुसरे लोग अपना समय मुझे देना चाहते हैं। पर मैं उनके समय नहीं लेता हूँ। जैसे - वे लोगों के बारी आने पर भी बाल्टि में पानी देना आदि

(ब) मैं दुसरों के साथ जिस प्रकार से व्यवहार करता हूँ। उसी प्रकार मैं दुसरों से पाता हूँ, बल्कि अधिक भी. यदि कोई मेरे साथ दुरव्यवहार करता है (नहीं पहचानने से) तो मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता उन्हीं के साथी मेरे बारे में उन्हें बताते हैं। तो वे मुझसे माफी मांगते हैं. तो मैं कहता हूँ कि माफी मांगने की कोई बात ही नहीं है, क्योंकि आपका ड्यूटी ही ऐसी है, फिर नहीं पहचानने से ये सब होता ही है।

अब मुझे दुसरों के द्वारा जो व्यवहार किया गया तथा मैं दुसरों के साथ जो व्यवहार किया दोनों ही श्रेष्ठ है क्योंकि जैसा उन अन्य लोगों के समझदारी तथा पहचान है के अनुसार वे व्यवहार किये. मेरे इस जेल में हुए संस्कार तथा पहचान के हिसाब से दुसरों के साथ मैं कर रहा हूँ।

(स) व्यवसाय में मैं अपने एक मिहन समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता। और पद, धन, यश, रूप प्राप्ति में तो वे चारों (पद, धन, यश, रूप) स्थाई रहने का चीज नहीं है। और जब - जब हम इसे स्थाई करने की सोचते हैं तब-तब दुखी होते ही है। इसलिए इसे स्थाई रखने का जरूरत ही नहीं, क्योंकि जब हम जन्म लिये तब कुछ नहीं लाये थे सब चीज यहीं उपलब्ध हुआ और जेल आये थे तो भी कुछ नहीं लाये थे तथा जेल से जायेंगे तो भी कुछ नहीं ... है, ... कर नहीं जायेंगे।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

तथा मृत्यु होने पर भी कोई चीज लेकर नहीं जायेगें फिर इस चीज के लिए दुखी क्यों होवें।

उत्तर③ जब झगड़ा - झंझट नहिं हुआ था तब संग्रह के बारे अधिक सोचता था मेरे पास बंगला, कार, नौकरी, लोग मुझसे अधिक से अधिक चाहें मैं किसी से कम न रहूँ आदि आदि थी। और आज मुझे ऐसा लगता है कि वे सब संग्रह करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि वे उपलब्ध होता ही है। अब मैं हमेशा असंग्रह के बारे में सोचता हूं।

मैं सुखी हूं मैं औरों को भी सुखी करना चाहता हूं। मुझे जिस प्रकार के मनुष्यों के बीच छोड़ दिया जाय मुझे कोई दुखी नहीं कर पायेगा बल्कि मैं उन्हें सुखी कर दुंगा।

व्यवसाय के बारे में पहले स्वालम्बी था और आज भी स्वालम्बी होना चाहता हूं।

दुसरों के द्वारा किया गया व्यवहार झगड़ा से पहले तथा जेल के बाद, जीवन विद्या से पहले अच्छा व्यवहार देने से सम्मानीत होता था और दुर-व्यवहार से अपमानीत होता था। और आज वे सब मान भय नहीं है।

जब झगड़ा - झंझट नहिं हुआ था तब तथा झगड़ा होने के बाद बदले की भावना था, जीवन विद्या के बाद बदले की भावना बिलकुल ही नहीं है। तथा मैं अब ऐसा व्यवहार ही नहीं करुगां, जिससे दुसरों को दुख हो।

दुसरों के मूल्यांकन करने में (मेरे द्वारा) मुझे जो भी कष्ट होता है, उसी प्रकार से सभी के साथ होता है जैसे काँटा चुभने से जितना दर्द मुझे होता है, उसी प्रकार काँटे से उतना ही दर्द दुसरों को भी होता है जो मुझे अच्छा लगता है, वे सभी को अच्छा लगता है जो मुझे बुरा लगता है, वे सभी को बुरा लगता है। ऐसा मैं समझता हूँ। पहले मैं स्वयं का मूल्यांकन नहीं करता था जीवन विद्या के बाद अब स्वयं का मूल्यांकन करता हूँ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उ० (4) अभी कमी लगती है –

व्यवसाय में छोटा सा टेलर था बहुत कमी है और इससे भी अच्छा व्यवसाय होना चाहिए जिसमें मेरे लिए तथा मेरे परिवार के लिए हो जाए तथा समाज के लिए भी कुछ दे सकूं।

व्यवहार में अभी हर रोज एक या दो तथा दो से अधिक लोगों को सुखी होने के समझ को सुना कर सुख को अधिक से अधिक समय देने का कोशिश करता हूं। जो मुझे बहुत कम लगता है, इससे और अधिक करने का इरादा है।

उ० (5) जीवन विषय से जो समझा हूं –

(1) स्वयं के बारे में – जीवन में पांच अक्षय बल होता तथा पांच अक्षय शक्ति होता है।
जीवन भार हीन होता है।
जीवन जिम्मेदारी वाला होता है।
जीवन की आवश्यकता निरंतर होता है।
जीवन के ताकत ज्यादा होता है।
जीवन के गति निरंतर होता है।
जीवन प्रभावशील होता है। अर्थात मान, अपमान को समझता है।
जीवन निरंतर सुखी रहना चाहता है।

(2) शरीर के बारे में – शरीर के बल, तथा शक्ति क्षय होने वाला होता है,
शरीर भार वाला है, तथा स्वतः क्रिया करने वाला है, शरीर के आवश्यकता सीमित होता है।
शरीर के ताकत कम होता है। शरीर के गति सीमित होता है। शरीर प्रभावहीन होता है।
अर्थात शरीर के प्रभाव जीवन पर नहीं पड़ता है।
शरीर के सुविधा सीमित होता है।

(3) परिवार व्यवस्था में – न्याय सुलभता हो, उत्पादन सुलभता हो, विनिमय सुलभता हो, स्वास्थ्य संयम हो तथा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शिक्षा - संस्कार की व्यवस्था होना जरूरी है क्योंकि उपरोक्त पांच प्रकार व्यवस्था होने से निरंतर सुखी होने का सुनिश्चित योजना है।

(4) समाज व्यवस्था में - मूल्यांकन आदमी जहाँ पर अधिक समय से रहता है। वहाँ पर उस आदमी का मूल्यांकन होता है। समाज व्यवस्था में ग्राम सभा होना (संगठन) जरूरी है। ग्राम सभा का अधिकार दण्ड देना का नहीं है बल्कि एक दुसरे का भलाई करने का अधिकार है। ग्राम सभा में समीति - शिक्षा-संस्कार समीति
- स्वास्थ-संयम समीति
- न्याय - सुरक्षा समीति
- उत्पादन कार्य समीति
विनिमय कोष समीति का गठन आवश्यक है।

(5) प्रकृति व्यवस्था में - प्रकृति के चारों अवस्थाओं के साथ (पदार्थ, प्राण, जीव तथा ज्ञानावस्था) हमें हमेशा नियम से न्याय करते हुए चलाना चाहिए, प्रकृति व्यवस्था हमारे ही सद्उपयोग के लिए ही है। हम इसके साथ सदुपयोग करते हुए चलते है तो निरंतर सुखी होते है। हम जब-जब प्रकृति व्यवस्था के साथ दुरुपयोग करते है उसका प्रतिफल हम भोगते ही है। कुछ फल कुछ समय बाद मिलता है, कुछ देर से, तो कुछ तत्काल मिल जाता है। जैसे - पदार्थावस्था के साथ सद् उपयोग या दुर उपयोग करने से कुछ समय के बाद फल मिलता है। प्राणावस्था तथा जीवावस्था के साथ सद् उपयोग या दुरुपयोग करने से कुछ समय बाद में फल मिलता है। ज्ञानावस्था के साथ में सद्व्यवहार या दुरव्यवहार करने से तत्काल (तुरंत) फल मिल जाता है।

अतः प्रकृति के साथ जीने के लिए या निरंतर सुख से जीने के लिए सद् उपयोग (व्यवहार) करना ही होगा।

(6) अस्तित्व व्यवस्था में —

सत्ता	में संपृक्त	प्रकृति
शून्य	घिरा हुआ	अवस्था
व्यापक	डूबा हुआ	
पारदर्शी	भीगा हुआ	
पारगामी		
अखण्ड		
पूर्ण		
ईश्वर		
अनादि		
ऊर्जा		
आकाश		
असीम		
नियंत्रण		स्वनियंत्रित

शून्य – जो स्वयं में क्रिया नहीं पर सभी क्रियाएँ जिससे आवेष्ठित एवं आच्छादित है, उसको शून्य कहते है।
व्यापक – सभी जगह पाया जाता है।
पारदर्शी – जिसके आर-पार दिखाई पड़ता हो।
पारगामी – हर चीज में पारगामी हो।
अखण्ड – जिसका विभाजन न हो।
पूर्ण – कोई परिवर्तन न हो।
ईश्वर – सभी जगह एकाग्रता अनुभव हो
अनादि – जिसका जन्म – मरण न हो
ऊर्जा – ~~जि~~ हर चीज में ~~क~~ क्रियाशील हो जो दिखाई न दे।
आकाश – जो हर जगह दिखती है।
असीम – जिसका कोई सीमा न हो।
नियंत्रण – जिसमें लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, ऊंचाई का नियंत्रित हो।

3(6) बाहर यदि मैं निकलता हूँ तो अपने परिवार के भरण-पोषण हेतु कृषि, समाज में स्वर्ग हेतु व्यवसाय तथा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

समाज सेवा के रूप जीवन विद्या को जगह-जगह लोगों के बीच जाकर जो समझा हूं, वो लोगों के पास या बीच समझा-कर तथ्य प्रस्तुत करके ही निरंतर सुखी रहूंगा, मैं निश्चय करके ~~कहता~~ कहता हूं कि मैं जितना सुखी हूं उसे बाँटता ही रहूंगा। जैसे - श्री साधन कुमार भट्टाचार्य - बागड़ीया जी, साहू जी और जो बाहर में गुरु जी फैले हुए हैं कि तरह, मैं भी समाज सेवा करना चाहता है।

उ० (7) अभी मैं जेल के अन्दर रहकर निम्नलिखित चाहता हूँ

(i) मुझमें सुधार हुआ है या नहीं, का जाँच होना चाहिए।

(ii) सुधार हुआ है तो कितना हुआ।

(iii) सुधार में कमी है, तो पूरा-पूरा सुधार होना चाहिए।

(iv) एक हफ्ता या दस दिन के लिए बैरक ट्रान्सफर (महिला बैरक छोड़कर) होना चाहिए, क्योंकि जिसे मैं समझाता हूं उसके साथ ज्यादा समय से रहूँ। मैं हर वार्डों में रहने का अवसर चाहता हूँ।

(v) जब तक मेरे फैसला नहीं होता है या जब तक मैं जेल में हूँ, तब तक ये अवसर देने की कृपा करें।

(vi) मैं और भी ~~के~~ (बाहर वालों के) शिविर में भाग लेना चाहता हूँ

(vii) मुझे जीवन विद्या के गहराई तक समझाया जाये।

कार्यालय अधीक्षक केन्द्रीय जेल, रायपुर (म.प्र.)

क्रमांक .... दिनांक ....

आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर के वार्ड क्रमांक 16 (वृद्धा वार्ड) में जीवन विद्या शिविर प्रशिक्षु करपादास, रामानन्द, गणेशराम के द्वारा दिनांक 3/5/96 से 10/5/96 तक शिविर बुजुर्गों को दी गयी इस शिविर में 12 लोग लगातार शिविर में ज्ञान अर्जन की गयी, इससे पूर्व के दूषित विचारों पर कुछ परिवर्तन आना पाया गया। शिविर में वृद्धों का अभिमत था कि इतनी आयु बढ़ने पर हम पहले नहीं जानते थे। इसलिये अपने बच्चों एवं परिवार में समझदारी एवं व्यवहार की ज्ञान नहीं दे पाये। इस जीवन विद्या ज्ञान को उन्होंने निरन्तर रूप से जीने में प्रेरणादायक माने। इसी प्रकार दिनांक 24/5/96 से 30/5/96 तक वार्ड क्रमांक 6 में जीवन विद्या शिविर किया गया जिसमें 10 लोग भाग लिया, शिविर में ज्ञान प्राप्त किये लोगों का विचार जाना जाने पर वे अब तक के बीते जिन्दगी में अंधेरे में चल रहे थे अब शिविर के दौरान उजाले की ओर रोशनी दिखाई आ गयी। ऐसा हमें महसूस हुआ।

आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर में जीवन विद्या शिविर से हमें - निरन्तर सुख से जीने में प्रत्येक मनुष्य में समझदारी एवं व्यवहार बनाये रखने से सुख एवं सुविधा मिलते रहने की ज्ञान प्राप्त हुवा।

हमें शिविर नहीं होने के पहले निरन्तर चिड़ना, क्रोध, बदले की भावना, गलतगढ़ से सताने एवं दुख पहुंचाने में इच्छा बनती रही।

जीवन विद्या शिविर से अब हममें पूर्व की प्रकृति से सुधार आ गया है।

(1) प्रशिक्षु - करणदास
(2) रामानन्द
(3) गणेशराम

जिला जेल
बिलासपुर
म०प्र०

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 19-8-96 से 28-8-96 तक

जीवन विद्या शिविर

वार्ड 7

1. बलराम S/o जगदीशराम (7)
2. सरवेलाल S/o अमोली (7)
3. मुरारीसिंह S/o माखनसिंह (7)
4. जगदीश S/o रामचरण
5. उदराज S/o शिवमंगलसिंह (8)
6. चतरदास S/o मुकुन्दलाल (7)
7. नारायणसिंह S/o बिशाली (7)
8. पवनसिंह S/o कुसरू (7)
9. उधोराम S/o जिवराखन (7)
10. गुरुदयालसिंह S/o बजरंगलाल (7)
11. अंजोरी S/o रंगलाल (7)
12. शिवरात S/o दुकाल (7)
13. मोतिचरण S/o फुनकू (7)
14. नरबदवा S/o छोटीराम (7)
15. रामप्यारे S/o छेदीराम (7)
16. नरोत्तमसिंह S/o जंगुराम (7)
17. सुरेश S/o नरवनलाल (7)
18. परमेश्वर S/o [illegible]सिंह (7)
19. राजेश्राम S/o रतिराम (7)
20. अर्जुन लाल S/o रामदुलारी (5)
21. पीलूराम S/o बुधराम (7)
22. वीरेन्द्रप्रसाद S/o मयाराम (7)
23. बृजेशसिंह S/o अमरबहादुरसिंह (7)
24. जनकराम S/o इतवारी (7)
25. कुन्नीराम S/o आत्माराम (7)
26. सीताराम S/o दशराम (7)
27. चांदराम S/o बुधराम (7)
28. रामप्यार S/o फेरहू (7)
29. सुरवराम S/o गंगाराम (7)

जीवन- विद्या - ज्ञान वार्ड (1)

दिनांक 19/6/06

(1) जनक पिता इतवारी = जीवन विद्या ठीक है सीखने की रुचि है शिविर और लगना चाहिए सात दिन की शिविर में भविष्य - परिवार में जीना अच्छा लगा।

(2) राधेश्याम पिता रतिराम = शिविर अच्छा लगा शिविर ज्ञान की और विचार जिसमें हम आगे बढ़े। समय देखते हुये अपने के साथ सही ढंग से जीवन जी सके। शिविर की सभी अच्छा ठीक है परिवार का ज्ञान अच्छा लगा।

(3) उधोराम पिता परिरक्षक - शिविर अच्छा लगा - स्वयं में जीना, परिवार में जीना समाज में जीना सभी को लेकर हमें जीना है हमारा जीवन चलेगा तो परिवार का जीवन अच्छा चलेगा

(4) परमेश्वर पिता लइनसिंग = परिवार के बारे जीना अच्छा लगा तथा समाज में किसी से गुस्सा करना लड़ना झगड़ना नहीं करूंगा शिविर अच्छा लगा। अब अपना भविष्य जीवन विद्या के अनुसार करूंगा, यहाँ से छुटने बाद घर वालों को समझाऊंगा तथा गाँव में साथियों को बताऊंगा इस ज्ञान को कापी में लिख कर याद करूंगा और बताऊंगा।

(5) इतरदास पिता मुकुन्दलाल = सभी ठीक लगा, स्वयं में जीने से समाज, परिवार सभी समझ कर जी सकूंगा और नियमित में जीवन ज्ञान पालन करूंगा

(६) नर्मदा पिता चौरी = परिवार में जीता हूँ परिवार में व्यवहार से जीवन चलाऊंगा, समाज के बात मानकर रहूंगा, सुनूंगा गलत बात छोड़ कर अच्छा काम करूंगा शिविर अच्छा लगा और लगना चाहिए शिविर बाहर में भी लगना चाहिए।

(७) मुरारीसिंह पिता माखन सिंग = शिविर बहुत बढ़िया लगा, पिता पुत्र के प्रति परिवार में जीना, व्यवहार में जीना सर्व श्रेष्ठ लगा शिविर में बैठने से चिंता दूर हो गया [illegible] ~~कर्म~~ कर्मचारी पुलिस विभाग में जीवन विद्या का ज्ञान मिलना चाहिए, और गांव में गलत काम कभी नहीं करूंगा और न कर रहा था पुलिस झूठा जेल भिजवा दिया - २ बार का कागज कोरा में झूठी बात ~~[illegible]~~ लिख कर हस्ताक्षर करवा कर यहाँ भेज दिया है मैं ~~[illegible]~~ निर्दोष हूँ

(८) उदराजसिंह पिता शिवमंगलसिंह = शिविर और लगना चाहिए दो बार शिविर में बैठ चुका हूँ: मैं स्वयं में जीना ठीक समझा. परिवार और समाज में प्रेम व्यवहार जीउंगा तथा छूटने बाद गाँव में परिवार और गाँव में बताऊंगा. किसी से गुस्सा झगड़ा नहीं करूंगा पहले भी शान्त था

(९) अजोरी पिता ~~[illegible]~~ - रंगलाल = शिविर अच्छा लगा परिवार के साथ प्रेम से रहना है पोषण पालन करूंगा शिविर और लगना चाहिए।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वार्ड 7 में 11-7-97 से 18-7-97 तक

(90) सुखराम पिता गंगाराम = शिविर अच्छा लगा - खराब लगा समझ नहीं आने से गुस्सा लगता है घर वालों का याद आने से मेरा परिवार के बात नहीं मानने से गुस्सा लगता है शिविर लगना चाहिये।

(91) नारायणसिंग पिता बौसालाल = शिविर अच्छा लगा स्वयं में जीना परिवार में जीना. परिवार से अच्छा सम्बंध बना कर जीऊंगा झगड़ा, लड़ाई गुस्सा नहीं करुंगा मारपीट नहीं करुंगा

(92) हरप्रसाद पिता होरीलाल = ठीक लगा परिवार समाज का सम्बन्ध ठीक लगा इसी के अनुसार ~~जीवन~~ जीऊंगा लड़ाई झगड़ा करने वालों समझा कर चलूंगा कभी-कभी न कभी मारूंगा. इसी के अनुसार जीवन चलाऊंगा।

(93) ~~बलदेव~~ बलराम पिता जगदीश = शिविर बहुत अच्छा लगा, स्वयं में जीना चाहता हूँ - परिवार, गाँव समाज से मधुर सम्बन्ध व्यवहार से जीऊंगा. गलत बात काम नहीं करुंगा गलत बात काम करने वालों गाँव मोहल्ला से समझौता करवा कर चलूंगा कभी न कभी बात मानेगा ऐसा मुझे विश्वास हो गया है

(94) पवनसिंग पिता पुसउ सिंग = शिविर अच्छा लगा - परिवार समाज से चलना अच्छा लगा किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं करुंगा सब से मिल रह कर जीवन चलाऊंगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

लोगो नहीं मानेंगे तो बार बार समझाकर अच्छा रास्ता सिखाऊंगा। मैं अपने परिवार से और गाँव में झगड़ा गुस्सा नहीं करूंगा, फिर व यहाँ जेल नहीं आऊंगा विश्वास हो गया है।

(१५) पुन्नीलाल पिता आत्माराम - जीवन विद्या बहुत बढ़िया लगा मुझे नया दिशा मिला, परिवार समाज में हमेशा अच्छा बात व्यवहार पर चलूंगा तथा जीवन विद्या का प्रचार करूंगा उन्हें जानने के लिये कहूंगा जीवन विद्या ज्ञान पुस्तक पढ़ कर बातों को सिखाऊंगा। शिविर हमेशा लगना चाहिए, यहाँ अब शिविर में बैठने से कोई चिन्ता नहीं है।

वार्ड नं० 15 व 16 में
जीवन विद्या शिविर
दिनांक 17-6-97 से 25-6-97 तक

1. संतोष मराठा S/o शंकर मराठा
2. चन्दा S/o भावसिंह
3. फुलीराम S/o सरगुजीया
4. बिहारी S/o मंगलू
5. संतोष S/o बाबूलाल
6. हरीशचंद्र S/o फुलीराम
7. शिवकुमार S/o बुदुल
8. पुरुषोत्तम S/o नत्थू
9. राजाराम S/o मुकुतराम
10. शिवशंकर S/o श्रीकिशन
11. गेंदूराम S/o हंसाराम
12. जुगाराम S/o रघुनाथ
13. रामप्यार S/o गरीबा
14. श्रीराम S/o बुधूसेन
15. अवधेश S/o चन्द्रमा सिंह
16. सजोराम S/o रवोरा

P.T.O.

1996-1998 बिलासपुर जेल कार्यक्रम_c

१६। ३। ९६
दिनाँक १५। ३। ९६ - जीवन विद्या शिविर

वार्ड १५ एवं १६

प्रशिक्षार्थियों के मूल्यांकन

१ संतोष मेराठा डा० :- शिविर और लगना चाहिये अच्छा लगा परन्तु एक बार मैं समझ नही आया।

२ चन्द्रभावसिंग :- शिविर अच्छा लगा और लगाना चाहिये।

३ पुनीराम डा० मर गुजिया :- शिविर अच्छा लगा।

४ बिहारी डा० मंगलू :- शिविर अच्छा लगा और लगाना चाहिये।

५ संतोष डा० बाबूलाल :- समझ मैं नही आया सुनने मैं अच्छा लगा. ~~जीवन~~ जीवन सिखने की आशा है और लगना चाहिये

६ हरिश चन्द डा० पुनीराम :- सभी शिविर की जानकारी अच्छा लगा बहुत कुछ समझा, और लगाना चाहिये।

७ शिवकुमार डा० कुदुल :- परिवार मैं व्यवस्था अच्छा अन्य विषय मैं अच्छा लगा शिविर और लगना चाहिये।

८ पुरुषोत्तम डा० नथ्थू :- शिविर की सभी बात समझ पाया, याद नही है और लगना चाहिये

९ राजाराम डा० मुकुलराम :- सभी विषय अच्छा इस ज्ञान की बात जानने से अच्छा लगा कहानी सुनना पसंद नही आया जीवन विद्या सिखना चाहता हूँ जीवन मे समझ आया और लगना चाहिये।

१० शिवशंकर डा० श्री कैशन :- बहुत अच्छा लगा और लगना चाहिये समाज सुधार के लिये अत्यन्त जरुरी है।

११ नंदू डा० इश्वाराम :- सभी बाते अच्छा लगा गलत काम नही करना चाहिये शिविर जेल के अन्दर और बाहर लगना चाहिये।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(92) प्रभुराम S/o रघुनाथ :- शिविर की सभी बातें समझ में आया विशेष तौर से नीयम समझ में आया नियम से चलेंगे। शिविर समाज को भी चाहिए सभी को सुनना चाहिए इससे उन्नति होगा

(93) रामचरण S/o गरीबा :- सभी बातें अच्छा लगा पहले के विचार में शिविर लगाने से बदलाव आया अब गाली नहीं देता।

(94) प्रेमराम S/o बुद्धसेन :- परीवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था, सभी विषयों में अच्छा लगा और समझ में सभी आया। शिविर सुनने जानने से विचार में बदलाव आया गुस्सा करना बंद किया। किसी से मारपीट नहीं करेगा। शिविर और लगना चाहिए

(95) भवचंद S/o चन्दुमारसिंह :- शिविर अच्छा लगा समाज व्यवस्था, परीवार व्यवस्था, मानव के प्रकार, प्राकृतिक नियम इसमें परीवार और समाज व्यवस्था बहुत अच्छा लगा समझ में आया पहले के विचार में बहुत बदलाव आया। अब बगैर सोचे समझे गलत काम नहीं करेगा। शिविर और लगना चाहिए

(96) सजीराम S/o रवीरा :- शिविर अच्छा लगा इससे समझदारी और व्यवहार में एवं स्वयं में व्यवस्था नियम समझ में आया अच्छा लगा शिविर और लगना चाहिए

वार्ड नं० 5

दिनांक 29-7-97 से. जीवन विद्या शिविर

दिनांक 29-7-97 से 5-8-97 तक

1. सनतकुमार S/o टहकुराम ✓
2. मंगलदास S/o धरमदास ✓
3. ईश्वर S/o हीराराम
4. बालकराम S/o रामसाय ✓
5. सिकन्दर S/o मार्टिन ✓
6. भुवनपाल S/o जयराम
7. अंबादराम S/o भागवत रिहाई
8. पीताम्बर S/o कुंजराम ✓
9. सुरेश पाण्डे S/o केदारनाथ पाण्डे
10. भागीरथी S/o गंगाराम
11. राजकुमार S/o बहोरन ✓
12. राजेन्द्र सिंह S/o मंगलखा सिंह
13. राजू गुप्ता S/o जगन्नाथ प्रसाद
14. कुमार S/o रामलाल ✓
15. विजय S/o टीकाराम ✓
16. रामसुजान S/o रामदीन
17. बरन S/o नरायण ✓
18. शंभूराम S/o बुद्धराम ✓
19. सीताराम S/o दरसराम रिहाई
20. राजकुमार S/o मूलाराम
21. सुरेश S/o कालिका प्रसाद रिहाई
22. रामू यादव S/o मंगल यादव
23. हरप्रसाद S/o छेदीलाल ✓

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनाँक २९।६ से ५।-५।९६ तक वार्ड नं. ४
जीवन विद्या शिविर

(1) बरनलाल पिता नरायणलाल
शिविर बहुत अच्छा लगा, इसकी जानकारी वार्ड में आपस में रहने वाले साथियों से चर्चा किया जाता है उन्हे भी शिविर में बैठने सलाह दिया जाता है, जीवन विद्या शिविर में आने से पुराना दुःख था वह दूर हो रहा, शिविर हर वार्ड में इसे लगाया जाना चाहिए।

(2) सन्तकुमार पिता टहकूराम = एक सप्ताह के जीवन विद्या शिविर में मन शांति मिल गया। वार्ड वाले साथियों से कहा जाता है कि सभी जीवन विद्या सिखें सीख जाने से किसी प्रकार से गलती नहीं होगा जो बात हम पहले नहीं जाने थे उसे जान गया यदि पहले जीवन विद्या सीख लिया होता तो बाहर में पारा गाँव वालों को बतलाता शिविर हर वार्ड में लगना चाहिए बाहर में भी लगना चाहिये।

(3) हरप्रसाद पिता होरीलाल :- भविष्य के लिये बहुत अच्छा है हर वार्ड और बाहर में भी शिविर लगना चाहिये इस ज्ञान से मुझे अच्छा लगा।

(4) सिकन्दर मार्टिन पिता राउ मार्टिन
जीवन विद्या सात दिन की शिविर में जो सुना बहुत अच्छी लगी मेरे पहले के जीवन में और शिविर के सात दिन सुने जाने पर मेरे जीवन में बहुत से नया जीवन के बारे में मालूम हो गया पिछले जीवन में जो कुछ हुवा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अब से ऐसा भूल कभी न होगा मै
जेल से बाहर जाने पर एक नया
जीवन विद्या ~~किता~~ के साथ जो शिक्षा
पाया उसे सदा याद रखते हुये पास
पड़ोसी को बता सकू।

(५) पितास्वर पिता कुंजराम ~~है~~
जीवन विद्या मे मेरा ~~जीवन~~ मे पुराना
भ्रम था वह मिट गया क्यो कि कोई
बात पर दूसरों पर आरोप लगाता था
वह मिट गया यह मेरा कर्म का फल था
जीवनविद्या पढ़ने से निरन्तर सुख
मिलेगा। कापी पेंसिल मिलना चाहिये।

(६) नरेश कुमार पिता रामनाथ ~~है~~ जीवन
विद्या बहुत अच्छा लगा इसे पढ़ने से
कौन कौन काम कैसा रास्ता चलना
चाहिये मालूम होगया सुख कैसे व
दुख को रास्ता जान गया शिविर जेल
व बाहर लगना चाहिये। और सब
जानने को आशा है कापी लिखने के
चाहिये।

(७) मंगलदास पिता धरमदास ~~है~~ जीवनविद्या
शिविर से साफ साफ समझदारी करना
जरूरी है इस जीवन मे सुधार आगया
भविष्य के बारे मे पुराना गलत बात
सोचना करना एक बदल कर नया
जीवन का रास्ता मिल गया जीवन
विद्या शिविर ~~को~~ ~~म~~ हमेशा ~~लगना~~
चाहिये और प्रत्येक व्यक्ति को
जानकारी जीवन विद्या का हो जाना
चाहिये विशेष कर प्रत्येक प्राथमिक
पाठशाला मे शिक्षा दिया जाना चाहिये
मुझे किताबे पढ़ना है कापी पेन
चाहिये। इसे कापी मे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

- लिखपढ़ का गांव पारा, पाठशाला जैसा कई जगह शिविर लगाऊगा।

(8) विजय कुमार पिता टीकाराम :- जीवन विद्या शिविर से हर प्रकार की ज्ञान मालूम हुआ जो हम गलत कार्य करते थे उस कार्य में पुरा बदलाव हो गया। इस शिविर को हर गाँव हर व्यक्ति हर स्कूलो में लगाया जाय, ताकि हर मनुष्य को जीवन विद्या का ज्ञान मिलना चाहिये जिससे किया गया गलत कार्य ना समझसे हो गया था वह नहीं होगा शिविर लगाना चाहिये आगे शिविर में भी पढ़ना चाहता हूँ।

(9) बालकराम पिता रामसाय :- जीवनविद्या शिविर से सहनशीलता, धर्म, जीवाणु और निर्जीव पदार्थ तक ज्ञान प्राप्त करने विद्या है इस विद्या को प्रत्येक व्यक्ति और गाँव गाँवमें लगाना चाहिये इससे अपने जीवन चलाने सुख शान्ति प्राप्त हो सके।

(10) शम्भू पिता बुधराम :- यहाँ से जाने बाद जहा भी रहूँ जीवन विद्या के अनुसार जीवन चलाऊगा, और जो समझा हूँ उसे लोगों को हमेशा बताऊगा लोगो स्वंम समझसकता हूँ यहाँ के सात शिविर में भाग लिया हूँ।

(11) गयाराम पिता दुकालू :- शिविरमें रो दिनसुना बहुत अच्छा लगा सुनने ज्ञानप्राप्त हुवा मैं हमेशा सुनना पढ़ना चाहताहूँ।

(12) राजकुमार पिता चाहोरन ६

शिविर बहुत अच्छा लगा पहले समझ नहीं पाया था अब कुछ बात दिमांक बैठ गया है आप गांव वालों को बताऊंगा, शिविर गांव गांव में लगना चाहिये इस प्रकार से लोगों गलत करने की विचार बदल जायेगा और अच्छा कार्य करेंगे

(13) ईश्वर पिता हीराराम ८ शिविर अच्छा लगा परिवार व्यवस्था अच्छा लगा शिविर अनुसार परिवार में व्यवस्था करूंगा, शिविर और जो नहीं जानते उनके लिये लगना चाहिये।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर - प्रथम पाली - 7.00 बजे सुबह से 12.00 बजे तक

क्रमांक	दिनांक	नाम	पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	वार्ड नं	पूरा पता
1	21/12/97	करणदास	धरमदास	36	B.A II	कृषि	4-7-95	3	ग्रा. व्याराभानी पो. फुलवारी तह. लोरमी जि. बिलासपुर
2	से	रामानन्द	रामनाथ	50	B.A.	व्यापार	15-7-96	15	ग्रा. व पो. तखातह. सीमगा जिला रायपुर (म.प्र.)
3		मोहनसिंह	कार्तिकराम	60	4थी	कृषि	8-9-97	5	ग्रा. व पो. गतउरा तह. व जिला बिलासपुर (म.प्र.)
4		केदार सिंह	कार्तिकराम	65	4थी	कृषि	8-9-97	5	ग्रा. व पो. गतउरा तह. व जिला बिलासपुर (म.प्र.)
5		दिलहरण	बद्रीक	33	अनपढ़	कृषि	11-5-97	6	ग्रा. व पो. बडेकरगी तह. कोटा जिला बिलासपुर (म.प्र.)
6		भागवत	परदेशी	25	5वी	कृषि	28-11-97	6	ग्रा. डीहलाडीह पो., तह. तखतपुर जिला बिलासपुर (म.प्र.
7		गोफेलाल	भरोसा	48	2री	कृषि	12-9-97	5	ग्रा. गांतपार पो. भालूखोदरा तह. लोरमी जि. बिलासपुर
8		रमेश गुप्ता	मन्नूलाल	24	8वी	दुकानदारी	5-11-97	6	ग्रा. टीकरापारा पो. [illegible] बिलासपुर
9		महेन्द्रसिंह	कमानसिंह	23	7वी	कृषि	18/10/97	8	मु. कुलहरियापो-पाली [illegible] बिलासपुर
10		सीताराम	सहाराम	33	5वी	कृषि	8-9-97	6	ग्रा. व पो. गतउरा तह. जिला बिलासपुर (म.प्र.)
11		बुद्धारसिंह	प्यारसिंह	31	B.A II	कृषि	11-12-96	6	ग्रा. पन्डरी पो. शिवनी तह. पेन्ड्रारोड जिला बिलासपुर
12		ललितप्रसाद	धौराजी	32	7वी	कृषि	23-1-96	6	ग्राम हरदीडीह पो. करेली तह. मुंगेली जिला बिलासपुर
13		रमेश गुप्ता	श्यामलाल	24	10वी	दुकानदारी	5-11-97	5	ग्रा. पो. टिकरापारा बिलासपुर तह. जि. बिलासपुर (म.प्र.)
14		प्रमोद गुप्ता	मन्नूलाल	27	12वी	दुकानदारी	5-11-97	7	ग्रा. पो. टिकरापारा तह. जि. बिलासपुर (म.प्र.)
15		मनराखन	भागबली	32	5वी	कृषि	1/1/96	7	ग्रा. पंचबहरा पो. बेलसरी तह. तखतपुर जि. बिलासपुर
16		गोकुला	अजित	30	2री	कृषि	1-1-96	7	ग्रा. पंचबहरा पो. बेलसरी तह. तखतपुर जिला बिलासपुर
17		दशरथ	धार्सीराम	32	12वी	कृषि	15-10-97	7	ग्रा. तेंदुवा पो. कुड़पार तह. व जिला बिलासपुर (म.प्र.)
18		उधोराम	जिवराखन	45	2री	कृषि	10/8/94	7	ग्रा. कनेरी पो. पीरइया तह. बिल्हा जिला बिलासपुर
19		शंभूदयाल	बुधराम	37	8वी	कृषि	7-12-96	7	ग्रा. गोलूगांव पो. बरमपुर तह. लोरमी जिला बिलासपुर
20		अशोक	धीलालाल	26	8वी	कृषि	26-2-92	7	ग्रा. सगौनाडीह पो. [illegible] तह. पंडरिया जि. बिलासपुर
21		ध्रुवकुमार	फुरुराम	54	4थी	कृषि	8-9-97	8	ग्रा. व पो. गतउरा तह. व जिला बिलासपुर (म.प्र.)
22		बृजलाल	मंगलूराम	18	10वी	विद्यार्थी	31/8/97	15	मु. पो. बोड़सरा तह. जांजगीर बिलासपुर
23		गयाराम	दुकालू	40	अनपढ़	कृषि	16-7-96	5	ग्रा. भिमपुरी पो. देवरीखोरा तह. मुंगेली जि. बिलासपुर
24		गणेश शर्मा	रामेश्वर	32	12वी	कृषि	10-11-97	6	मु. पो. [illegible] तह. तीलदा जिला रायपुर (म.प्र.)
25		गजेशराम	जिवराखन	32	5वी	कृषि	10-8-94	7	ग्रा. कनेरी पो. पीरइया तह. बिल्हा जिला बिलासपुर
26		समारु लाल	~~[illegible]~~ तिरिथराम	46	5वी	कृषि	8-9-97	5	ग्रा. व पो. गतउरा तह. व जिला बिलासपुर
27		नारायण	जेठूराम	25	9वी	कृषि	4-7-95	3	ग्रा. व्याराभानी पो. फुलवारी तह. लोरमी जि. बिलासपुर
28		रहसलाल	अंजोरा	31	2री	कृषि	15-7-96	12B	ग्रा. बीनैका पो. ओरवर तह., जिला बिलासपुर (म.प्र.

P.T.O.

क्रमांक	दिनांक	नाम	पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रवेश	वार्ड	पूरा पता
29	21 12/97	उजारन	पूरनदास	30	4थी	कृषि	21-2-97	12B	ग्रा. कुधुरबाल पो. चंदली तह. लोरमी जि. बिलासपुर
30	से	भागवत	फुकदास	26	B.A.III		4 9/96	3	ग्रा. अम्बीकापा पो. धुमा तह. कोटा जि. बिलासपुर
31		मुरारीसिंह	माखनसिंह	42	10वी	कृषि	28 4/95	7	ग्रा. भैंसमुड़ी पो. शिउड़ तह. जांजगीर जि. बिलासपुर
32		आत्माराम	हरप्रसाद	46	9वी	कृषि	28 9/97	8	गतवा पो. पन्तोरा तह. जांजगीर बिलासपुर
33		रमेशर	कोंधीराम	35	7वी	ड्राइवर	13 7/95	3	ग्रा. व पो. सोन थाना मस्तुरी तह. जिला बिलासपुर
34		राजकुमार	मुनीराम	29	11वी	कृषि	8-9-97	6	ग्रा. व पो. गतौरा तह. व जिला बिलासपुर
35		मनोहर	डेरहा	32	8वी	बुनकर	26-11-97	8	ग्रा. व पो. लखराम तह. व जिला बिलासपुर
36		बुधचुराम	बोडर	60	अशि.	कृषि	8 8/97	8	ग्रा. पो. गतौरा तह. जि. बिलासपुर
37		कुंवारू	तिहारी	30	अनपढ़	कृषि	20 5/97	3	ग्रा. केहरपुर पो. भरेवा तह. मुंगेली जि. बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर – द्वितीय पाली – 1.00 बजे से 5.00 बजे तक

क्रमांक	दिनांक	नाम	पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	वार्ड नं.	पूरा पता
1	21-12-97 से	रूपदास	चरणदास	36	BA पूर्व	कृषि	4-7-95	3	ग्राम पाठा पानी पो. फुलवारी तह. लोरमी जिला बिलासपुर (म.प्र.)
2		रामानन्द	रामनाथ	50	B.A.	व्यापार	15-7-96	15	ग्रा. व पो. पन्द, तह. सीतंगा जिला रायपुर (म.प्र.)
3		दिलहरण	बहोरिक	33	अनपढ़	कृषि	11-5-97	6	ग्रा. व पो. बड़े करगी तह. कोटा जिला बिलासपुर
4		बुद्धरसिंह	परिरसिंह	31	BA II	कृषि	11-12-96	6	पकरी पो. खिसनी तह. पेण्ड्रारोड जिला बिलासपुर
5		सदुराम	भूपाल सिंह	24	7वी	मजदूरी	5-8-97	3	रामहेपुर पो. तह. लोरमी बिलासपुर
6		शिवराम	भागवत	65	4थी	कृषि	3-5-97	14	ग्रा. पोड़ाभाट पो. पोड़ाभाट तह. पामगढ़ जि. बिलासपुर
7		घसीलाल	प्रहलाद	50	7वी	कृषि	12-12-97	6	ग्रा. पो. भरनी तह. तखतपुर बिलासपुर
8		श्यामचन्द	देवप्रसाद	46	4थी	कृषि	22-8-96	5	ग्रा. व पो. खजरानी तह. शक्ति जिला बिलासपुर (म.प्र.)
9		मंगरू	शिवधन	34	9वी	नौकरी	13-12-97	5	ग्रा. व पो. टोलबाजराय तह. बैरिया जिला बलिया (उ.प्र.)
10		रामजनम	हरहंगी	39	12वी	कम्पनी नौकरी	13-12-97	6	ग्रा. अटौली पो. वैधपुर देवकली तह. गाजीपुर जि. गाजीपुर (उ.प्र.)
11		कुंजराम	सुन्दरवा	35	अनपढ़	कृषि		6	ग्रा. कोनेरी पो. पीरईया तह. बिलहा जिला बिलासपुर (म.प्र.)
12		गनेशराम	जिवरखन	32	8वी	कृषि	10-9-94	7	ग्रा. कोनेरी पो. पीरईया तह. बिलहा जिला बिलासपुर (म.प्र.)
13		नारायण	जेठूराम	25	7वी	कृषि	4-7-95	3	ग्रा. पाठापानी पो. फुलवारी तह. लोरमी जिला बिलासपुर
14		रहसलाल	अंजोरा	31	2री	कृषि	15-7-96	12 B	ग्रा. बीनैवा पो. ओखा तह. व जिला बिलासपुर (म.प्र.)
15		उधारनदास	फकरनदास	30	4थी	कृषि	21-2-97	12 B	ग्रा. कुदुरताल पो. चपोरी तह. लोरमी जिला बिलासपुर
16		भागवत	पुनदास	26	B.A. III	...	4-9-96	3	ग्रा. अमलीकापा पो. धुमा तह. कोटा जि. बिलासपुर (म.प्र.)
17		कुमारीसिंह	माखनसिंह	42	10वी	कृषि	28-4-95	7	ग्रा. भैंसमुड़ी पो. शिउड़ तह. जांजगीर जिला बिलासपुर
18		भजनलाल	अघारीराम	36	8वी	कृषि	26-3-96	5	ग्रा. घोरपुरा पो. कुरान तह. मुंगेली जिला बिलासपुर
19		हेमसिंह	करनसिंह	21	2री	कृषि	1-10-94	3	ग्रा. जरहापारा पो. अखरार तह. लोरमी जि. बिलासपुर
20		गजेन्द्र	जगन्नाथ	23	M.A.	विद्यार्थी	14-9-97	7	ग्रा. पो. थाना रतनपुर तह. कोटा जि. बिलासपुर
21		संतोष साहू	कुंवर सिंह	40	3री	व्यवसाय	20-8-96	5	ग्रा. व पो. पाण्डातराई तह. पंडरिया जिला बिलासपुर
22		विष्णुप्रसाद	बिसाल	15	7वी	विद्यार्थी	12-9-97	15	ग्रा. गांतापार पो. आलूखोदरा तह. लोरमी जि. बिलासपुर
23		चिन्तामणी	पचारू	48	2वी	कृषि	9-12-97	3	ग्रा. व पो. आलूखोदरा तह. लोरमी जिला बिलासपुर
24		कुंवारू	तिहारी	30	अनपढ़	कृषि	20-5-97	3	ग्रा. केहरपुर पो. भरेला तह. मुंगेली जिला बिलासपुर (म.प्र.)
25		सन्तराम	टहकुराम	26	3री	व्यवसाय	20-4-95	5	ग्रा. भैंसमुड़ी पो. शिउड़ तह. जांजगीर जि. बिलासपुर
26		फतेराम	दुकालू	46	5वी	कृषि	16-7-96	3	ग्रा. भीमपुरी पो. टेडहाधौरा तह. मुंगेली जि. बिलासपुर
27		लोमस	बिसाल	19	7वी	~~विद्यार्थी~~ कृषि	12-9-97	15	ग्रा. गांतापार पो. आलूखोदरा तह. लोरमी जि. बिलासपुर
28		सालिकराम	बरवारिया	40	2री	कृषि	7-9-97	3	ग्रा. खपरीब्राह्मण पो. लौदा तह. मुंगेली जि. बिलासपुर
29		शंभूदयाल	बुधराम	37	8वी	कृषि	7-12-96	7	गौलूगांव पो. बरमपुर लोरमी बिलासपुर

क्रमांक	दिनांक	नाम	पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	बैठक	पूरा पता
1	21.12.97	करनदास	धरमदास	36	B.A	कृषि	4.7.95	3	ग्राम-धाठापानी पो० फूलवारी तह: लोरमी जि० बिलास०

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

क्र.	दिनांक	नाम	पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	वार्ड नं.	पता	रिहा/जेल स्थानांतर
01.	15 02/97 से	सेवकराम	होरीलाल	42	11 वीं	कृषि	26 6/91	3	ग्रा व पो. चन्द्रपुर तह. सक्ती, जि. बिलासपुर	
02.	21 02/97	करनदास	धरमदास	36	बी.ए. प्रथम	कृषि	04 07/95	3	धाठापानी पो. फूलवारी त. लोरमी जि. बिलासपुर	
03.	तक	राजू "राजकुमार"	लिखरू	21	बी एसी	विद्यार्थी		4	मस्तुरी पो. मस्तुरी थाना मस्तुरी बिलासपुर	
04.		शिवराम	फिरतूराम	22	9 वीं	कृषि	24 4/96	2	ग्रा पो. कपिसदा थाना अंजेरा जि. बिलासपुर	
05.		रामगोपाल	डोकरीराम	32	BA III	क्लर्क		6	मु. पो. तह. जांजगीर बिलासपुर	रिहा
06.		रामप्रसाद	बोचनसिंह	22	5 वीं	बढ़ई	17-12-96	2	मु. अरके थाना पसान जिला बिलासपुर	
07.		लक्ष्मीनारायण	कुंवरसिंह	26	5 वीं	कृषि	4-7-97	14	ग्रा. धाठापानी पो. फुलवारी तह. लोरमी जि. बिलासपुर	
08.		संतोष कुमार	पुसउ	27	B.S.C.	विद्यार्थी	23-1-96	3	हरदीडीह पो. कोटमी तह. मुंगेली जि. बिलासपुर	रिहा
09.		वेदू सिंह	गोवर्धन सिंह	44	11 वीं	कृषि		3	मु. मंगला था. सिविल लाईन जि. बिलासपुर	जेल स्था.
10.		अमित कुमार	कोदूराम	37	11 वीं	शिक्षक		3	मु. पो. थाना तह. सागर जिला सागर	रिहा
11.		शंकर गिरि	जगदीशगिरि	39	11 वीं	कृषि		3	ग्रा. चिरईखार था. कोटा जिला बिलासपुर	जेल स्था.
12.		रमेशर	बोधीराम	35	7 वीं	ड्राइवर	13-7-95	3	मु. व पो. खैरा थाना मस्तुरी तह. जि. बिलासपुर	
13.		भूपाल	छेदूराम	36	11 वीं	कृषि	10 12/97	3	मु. पो. बिलादेही थाना जयजयपुर तह. चांपा बिलासपुर	
14.		गणेशराम	जीवराखन	32	5 वीं	कृषि	10-8-94	7	कनेरी पो. पिरईखार तह. बिल्हा जि. बिलासपुर	
15.	13 8/97	जगनिवास	नंदुप्रसाद	27	8 वीं	कृषि	13-8-96	3	मु. लालखदान था. तोरवा जि. बिलासपुर	रिहा
16.		[illegible]	[illegible]	60	B.A.	व्यवसाय	15 7/96	15	मु. पो. थाना सिमगा जि. रायपुर	
17.		राजकुमार	राजाभाऊ	25	11 वीं	पटवारी	28 3/96	12B	मु. पो. बाकखोली — — बिलासपुर	
18.		विक्रम बहादुर	ब्रजबहादुर	33	8 वीं	कृषि		3	मु. पो. कन्नाजपुर पो. पारवतपुर थाना ... जिला सुल्तानपुर (उ.प्र.)	जेल स्था.
19.		मधुसूदन	रामस्वरूप तिवारी	34	L.L.B.	वकील	17-12-96	2	मु. पो. तखतपुर बिलासपुर (म.प्र.)	रिहा
20.	21 ...	आनन्ददास	सुन्दरलाल	45	5 वीं	कृषि	21-10-94	3	मु. धनगांव गोसाई था. अरहागांव जि. बिलासपुर	जेल स्था.
21	27 3/97 से	राजेन्द्र	बुधराम	30	BA III	कृषि		2	मु. पो. बोदरी जिला बिलासपुर	रिहा
22	3 4/97	राजेन्द्र	तुलसीप्रसाद	24	10 वीं	कृषि		2	मु. पो. भदौरा तह. जिला बिलासपुर	जेल स्था.
23	तक	राजेश	गयासिंह	27	8 वीं	कृषि		3	- " - " - " -	रिहा
24		गोपालदास	लालदास	27	12 वीं	कृषि	28 4/95	3	मैंसमुड़ी पो. सिउड़ जांजगीर बिलासपुर	
25		रामगोपाल	डोकरीराम	32	BA III	क्लर्क		6	मु. पो. तह. जांजगीर बिलासपुर	
26		वेदुसिंह	गोवर्धनसिंह	44	11 वीं	कन्डेक्टर		3	मु. पो. मंगला बिलासपुर	जेल स्था.
27		महेशराम	वृन्दावन	30	8 वीं	कृषि		5	मु. ... पो. सालेटेकरी लोरमी बिलासपुर	रिहा
28		नरोत्तम	जेठूराम	18	10 वीं	विद्यार्थी	4.7.95	7	मु. धारापानी पो. फुलवारी तह. लोरमी बिलासपुर	
29		शोभाराम	फिरतुराम	24	12 वीं	विद्यार्थी	24.4.96	2	मु. पो. कपिसदा थाना अंजेरा जि. बिलासपुर	
30		मोहन	छन्नूरा	28	11 वीं	दुकानदारी	3-9-96	7	मु. पो. टेन्गनमाड़ा सि. लो. बिलासपुर	रिहा
31		गणेश राम	राजकुमार	27	10 वीं	कृषि	28.4.95	3	मु. मैंसमुड़ी पो. सिउड़ तह. जांजगीर बिलासपुर	
32		गणेश प्रसाद	जीवराखन	32	5 वीं	कृषि	10.8.94	7	मु. कनेरी पो. पिरईखार तह. बिल्हा बिलासपुर	

P.T.O.

दिनांक

क्र	दिनांक	नाम	पिता का नाम	उम्र	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	बडि	पता	रिहा / जेल स्थानांतरण
33	27 3/97	अमित कुमार	कोदुराम	35	11वीं	शिक्षक		3	मु.पो. सागर जिला सागर	रिहा
34	से 3 4/97	मुरारी सिंह	माखन सिंह	42	10वीं	कृषि	28 4/95	7	ग्रा. भैंसगुड़ी पो. सिवड़ तह. जांजगीर बिलासपुर	
35	तक	कुरन दास	धरम दास	36	BA II	कृषि	4 7/95	3	घाठापानी पो. फुलवारी तह. लोरमी बिलासपुर	
36		सेतराम	यादराम	20	5वीं	कृषि	19 7/95	15	मु.पो. चकरेली थाना बाराद्वार सक्ती बिलासपुर	रिहा
37		अशोक	सत्यनारायण	25	8वीं	कृषि		3	बिरकोनी तह. जांजगीर बिलासपुर	
38		शंभू दयाल	बुधराम	37	8वीं	कृषि	7 12/96	7	ग्रा. भेड़नू पो. बरतुर तह. लोरमी बिलासपुर	
39		चरण राम	बजनराम	40	अशि.	कृषि	11 11/95	2	मु.पो. बैमानगोई बिलासपुर	जेल ट्रांसफर
40		करमचंद	पारसनाथ							
41		रामानंद	रामनाथ	50	BA	व्यापार	15 7/96	15	मु.पो. तह. सिमगा जिला रायपुर	
42	15 5/97	सूनास	कोमल	31	5वीं	कृषि	2 10/96	7	मु.पो. तह. बिलासपुर	
43	से	रामसिंह	रूगूसिंह	30	7वीं	मजदूरी	30.4.97	8	मु. भदौरा पो. जयरामनगर बिलासपुर	रिहा
44	21 5/97 तक	आनसिंह	सुकलाल	30	11वीं	कृषि	8.3.94	2	मु.पो. तिवरता मारवपुर करपोरा बिलासपुर	जेल ट्रांसफर
45		ईश्वर	सेतराम	30	2री	कृषि	15 8/96	8	मु.पो. तह. सरकंडा बिलासपुर	
46		नरेश राम	जीवन लाल	37	11वीं	व्यवसाय	8 12 5/97	8	मु.पो. बोदरी चकरभाठा बिलासपुर	
47		सतोष धुव	भेपुराम	30	7वीं	टेलर्स		13A	मु.पो. हिर्री माइन्स तह. बेलहा जि. बिलासपुर	
48		दयाराम	हीराराम	28	4थी	मजदूरी	14 3/97	8	मु.पो. चिंगराजपारा बिलासपुर	
49		अनिल	लक्ष्मीनारायण	22	5वीं	कृषि	28 2/96	8	मु.पो. मसनीया तह. सक्ती बिलासपुर	
50		राजू सिंग	बलदेव सिंग	27	10वीं	कृषि	7 10/96	8	कर्मचारी कालोनी सि.को. बिलासपुर	
51		अंजोरी	रंगलाल	50	अशि.	कृषि		7	मु.पो. जोंधरा तह. मस्तुरी बिलासपुर	रिहा
52		विरेन्द्र मसीह	संत मसीह	30	2री	कृषि	12 3/97	8	मु.पो. तह. सरकंडा बिलासपुर	
53		बलराम	जगदीश	30	अशि.	कृषि	2 3/97	7	मु.पो. डगनिया सीपत बिलासपुर	
54		नरेश कुमार	रामलाल	21	10वीं	कृषि	10 4/97	4	मु. हितकस्सा पो. महामाया जिला दुर्ग	
55		सीताराम	परसराम	30	अशि.	कृषि		8	मु.पो. सेंदरी कोनी बिलासपुर	रिहा
56		अर्जुन	जगन्नाथ	35	अशि.	कृषि		8	मु.पो. मसानगंज तहसील बिलासपुर	
57		बाबू संतमसीह	शनि मसीह	26	1ली	कृषि	14 8/96	13A	मु.पो. लरबहर बिलासपुर	रिहा
58		राजेन्द्र	सहसराम	21	10वीं	कृषि	12 5/97	8	मु.पो. सरकंडा बिलासपुर	
59		चन्द्रकुमार	मेतराम	32	5वीं	मजदूरी	18 4/97	8	मु.पो. रामगढ़ सिविल लाईन बिलासपुर	
60		कुरन दास	धरम दास	36	BA II	कृषि	4 7/95	3	घाठापानी पो. फुलवारी तह. लोरमी बिलासपुर	
61		ध्वनि दास	अनुप दास	30	अ.	कृषि	25 4/97	8	मु.पो. कवडीमा सीपत बिलासपुर	
62		रमेश्वर	बोधीराम	35	7वीं	ड्राईवर	13 7/95	3	मु.पो. सोन थाना मस्तुरी बिलासपुर	
63		मनोज	भागीरथी	31	अशि.	कृषि	11-7-96	5	मु.पो. नवलगढ़ गौरेला बिलासपुर	रिहा
64		भागीरथी	महावीर	25	5वीं	कृषि	2 5/97	8	मु.पो. सरगीड थाना बेलगहना बिलासपुर	
65		बल्लू	सियावाल							
66		गणेश	शिवप्रसाद	32	5वीं	कृषि	10 8/94	7	कनेरी पो. विरैया तह. बिल्हा बिलासपुर	

P.T.O.

क्र	दिनांक	नाम	पिता का नाम	उम्र	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	प्रेम प्रविष्ट	बंडि	पता	रिहा/जेल शुरू
67	15 5/97 से	मनरखन	भागवली	32	5वी	कृषि	1 1/96	7	पंचवस्या पो बेलसरी लखनपुर बिलासपुर	
68	21 5/97	रामानंद	रामनाथ	50	B.A	व्यापार	15 7/96	15	मु.पो तह. सिमगा जिला रायपुर	
69	तक	विनोद	रामकुमार	23	10वी	कृषि	15 4/97	3	मठा पो. सांतरा डर्ड जिला दुर्ग	(रिहा
70		शंभू दयाल	बुधराम	37	8वी.	कृषि	7 12/96	7	ग्रा. गेंदडू गांव पो. बरमपुर लोरमी बिलासपुर	
71		अमित कुमार	कोंदुराम	37	11वी	शिक्षक		3	मु पो थाना तह. सागर जिला सागर	
72		शिवराम	भागवत	65	4थी	कृषि	3 5/97	14	कुपीड़ाभाठ तह. पामगढ़ बिलासपुर	
73		संतोष	पुसऊ	27	B.S.C.	विद्यार्थी	23 1/96	3	दरदडीह पो कनेली मुंगेली बिलासपुर	रिहा
74		रामसुजान	रामदीन	32	5वी	कृषि		8	मु.पो. तह लोरमी बिलासपुर	रिहा
75		शोभाराम	फिरतु	24	12वीं	विद्यार्थी	24 4/96	2	मु.पो कापसदा पेंड्रपुर बिलासपुर	
76		मुरारी सिंह	माखन सिंह	42	10वी	कृषि	28 4/95	7	ग्रा. मेंसकुडी पो सेकड़ जांजगीर बिलासपुर	
77		अर्जुन	धनाराम	25	8वी	कृषि		5	मु.पो दर्रभाठा बिलासपुर	रिहाई
78		अशोक	सत्यनारायण	25	8वी	कृषि		3	मु.पो. बिर्रा जांजगीर बिलासपुर	
79		मोतीलाल	नैनदास	45	8वी	कृषि		3	मु. चमारी पो. बोदा मुंगेली बिलासपुर	रिहा
80		रविकुमार	विजय कुमार	24	8वी	कृषि		2	मु.पो. तह कोटा बिलासपुर	जेल शुरू
81		कुबेर	[illegible] प्रसाद	32	12वी	~~[illegible]~~ मजदूरी	2 3/97	5	मु.पो. बाबु नगर तोरवा बिलासपुर	रिहा
82		लक्ष्मण	आलिम सिंह	28	7वी	कृषि		7	मु.पो तह. कोटा बिलासपुर	जेल शुरू
83	17 6/97	संतोष	शंकर	18	2री	कृषि	26 3/97	16	मु.पो थाना तह. कोरबा बिलासपुर	रिहा
84	से	प्रकाशचंद	धरमदास	18	10वीं	विद्यार्थी	4 7/95	15	धाबापानी पो खुडवाँ लोरमी बिलासपुर	
85	25 6/97	चंदा	भाव सिंह	21	3री	कृषि	15 7/96	16	कुबिनैका पो औखर बिलासपुर	
86	तक	पुनीराम	सरगुजिहा	20	अ	कृषि	26 11/97	16	परसा कोटा बेलगहना बिलासपुर	रिहा
87		सतीश	मुरली	18	अशि.	कृषि	17 5/97	15	मु.पो. तह. व जिला बिलासपुर.	
88		हरिशचंद	पुनीराम	20	9वी	कृषि	4 6/97	15	मु.पो. गतौरा मस्तुरी बिलासपुर	
89		संतोष	बाबूलाल	18	2री	कृषि	25 1/97	16	मु.पो कोरबा थाना तह. कोरबा बिलासपुर	
90		रमेश	हेमसिंग	19	3री	कृषि	10 5/97	16	मु. पो. चिगराजपारा मरंकडा बिलासपुर	रिहा
91		बांसल	लालदास	20	10वी	कृषि	28 4/95	16	मेंसकुडी पो सेकड़ जांजगीर बिलासपुर	
92		बिहारी	मंगलू	19	1ली	कृषि	25 6/97	16	मु. पो. बिधाशाला कुकुर पड़रिया बिलासपुर	
93		सीताराम	बैजू	19	2री	कृषि	17 2/96	16	मु. पो. थाना तह. गुरिया जिला रांची (बिहार)	
94		मनोज	अंगोप्रसाद	18	5वी	कृषि		15	मु.पो. टिकरापारा बिलासपुर	रिहा
95		भगत	समारू	20	5वी	कृषि	5 1/97	15	गतौरा थाना मस्तुरी बिलासपुर	
96		शिव	कुंदुल	18	2री	कृषि	5 10/96	16	बोडसरा थाना जांजगीर बिलासपुर	रिहा
97		पुरषोत्तम	श्यामकुमार	17	7वी	कृषि	16 12/96	16	नरी पो. हसना थाना चांपा बिलासपुर	

P.T.O.

क्र.	दिनांक	नाम	पिता का नाम	उम्र	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	वर्ष	पता →	रिहा व जेल क्रमांक
98		पुरषोत्तम	महत्तू	20	5वी	कृषि	21 7/96	16	पाली तह. रतनपुर बिलासपुर	रिहा
99		राजाराम	मुकुतराम	60	4थी	कृषि	1 3/96	16	मु. भूनापानी पो. सालेहोवी लोरमी बिलासपुर	
100		उमेश	बाबूदास	30	8वीं	मजदूरी	16 5/97	16	मु. पो. तालापारा सिविल लाइन बिलासपुर	
101		शिवशंकर	श्री केशान	18	11वी	विद्यार्थी	22 4/97	15	मु. पो. मैहर जिला व तह. सतना	
102		गैंदुराम	हंसाराम	18	अशि.	कृषि	18 12/96	15	मुकली थाना पो. लोरमी बिलासपुर	
103		घुरी	साविकराम	18	6वीं	कृषि	15 3/97	15	मु. पो. बारा [illegible] तारबाहर बिलासपुर	
104		मनीष	शिव	19	7वी	मजदूरी	6 6/97	16	मु. पो. [illegible] बिलासपुर	
105		जुगराम	रघुनाथ	20	7वी	कृषि	14 4/97	16	मु. पो. मुंजियाबोर [illegible] बिलासपुर	
106		परदेशी	गोपीनाथ	37	4थी	कृषि		15	मु. पो. फुगुरम तह. सक्ती बिलासपुर	
107		रोहित	धरमदास	16	3री	विद्यार्थी	4 7/95	14	घाघापानी पो. फुलवारी लोरमी बिलासपुर	
108		रामाधार	गरीबा	21	4थी	कृषि		16	मु. पो. नवापारा कटघोरा बिलासपुर	रिहाई
109		राजू	दासी मांझी	22	अशि.	कृषि	15 5/97	15	मु. पो. थाना [illegible] बिलासपुर	
110		श्रीराम	[illegible] द्विवेदी	19	11वी	विद्यार्थी	18 5/96	15	मु. देवरगांव पो. मुकलीपानी [illegible] बिलासपुर	
111		अवधेश सिंह	चन्द्रभान	18	10वी	कृषि	19 3/97	15	मु. पो. [illegible] बिलासपुर	
112	3 6/97 से 10 6/97 तक	शिवराम	भागवत	65	4थी	कृषि	3 5/97	14	मु. पो. पोड़ीभाठ पामगढ़ बिलासपुर	
113		धरमदास	कुम्हार	75	अशि.	कृषि	4 7/95	14	घाघापानी पो. फुलवारी लोरमी बिलासपुर	
114		कुवर सिंह	कुम्हार	80	4थी	कृषि	4 7/95	14	—"— —"— —"— —"—	
115		जेठूराम	कुम्हार	65	अशि.	—"—	—"—	—"—	—"— —"— —"— —"—	
116		लकखुराम	हीरालाल	45	अ. शि.	व्यापारी	14-4-97	14	मु. पो. [illegible] लोरमी बिलासपुर	रिहा
117		देवीलाल	घिरसाय	65	8वीं	कृषि	28-4-95	14	[illegible] पो. सिवनी जांजगीर बिलासपुर	
118		रामबली	कोपनराम	60	2री	कृषि	1-1-96	14	ग्रा. [illegible] पो. [illegible] तखतपुर बिलासपुर	
119		रामे	सरखवा	40	3री	कृषि	23 1/95	14	मु. पो. [illegible] लखनपुर बिलासपुर	जेल क्र.
120		दुलास	रामाधीन	50	अशि.	कृषि	23 1/95	14	—"— —"— —"— —"—	रिहा
121		चैतराम	कुम्हार	70	अशि.	कृषि	4 7/95	14	घाघापानी पो. फुलवारी लोरमी बिलासपुर	
122		पुसऊ	बराती	50	3री	कृषि	23 1/96	14	[illegible] पो. [illegible] मुंगेली बिलासपुर	रिहा
123		गोफे	[illegible]	60	अशि.	कृषि	7 11/95	14	[illegible] पो. तह. मुंगेली बिलासपुर	
124		नारायण	दशरथ	64	8वी	कृषि	1 1/97	14	मु. [illegible] पो. [illegible] मुंगेली बिलासपुर	
125	24 5/97 से 31 5/97 तक	मोहितराम	[illegible]	52	2री	कृषि	6 4/97	6	[illegible] पो. कुधरी तह. सक्ती बिलासपुर	
126		गनपत	तुलसी	39	4थी	कृषि	6 4/97	6	—"— —"— —"—	रिहा
127		लक्ष्मण	पंचराम	38	6वी	कृषि	6 4/97	6	—"— —"— —"—	रिहा

P.T.O.

क्र.	दिनांक	नाम	पिता का नाम	उम्र	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	पदि	पता →	रिहा व जेल ट्रांसफर
128	24/5/97	तीजराम	गरहन लाल	43	3री	कृषि	6/4/97	6	कुवबा पो. शिमिहाई सक्ती बिलासपुर	रिहा
129	से	सालिक	दुखीराम	32	5वी	कृषि	13/9/96	6	बड़ेमिला भालूमाड़ा शहडोल	
130	31/5/97 तक	जगेश्वर	घासीराम	40	अशि.	कृषि	9/5/94	6	डोंगरीडीह पो. अमलीडीह तह सक्ती बिलासपुर	
131		दुधारी	पीलकराम	30	2री	कृषि		6	सीचनपुर पो. लगरा मुंगेली बिलासपुर	रिहा
132		सरवन लाल	मल्लूराम	29	8वी	कृषि		6	मु.पो. तह. पण्डरिया बिलासपुर	रिहा
133		अंजोर दास	फुंदरू	45	अशि.	कृषि		6	मु.पो. बेमेतरा जिला बिलासपुर	
134	4/6/97	रामगोपाल	पुनीराम	35	अ.शि.	कृषि	21/5/97	8	मु.पो. बिर्रा तह चन्द्रपुर बिलासपुर	
135	से	राम सिंह	रुगू सिंह	30	7वी	मजदूरी	23/4/97	8	मु.पो. मल्हरी बिलासपुर	
136	11/6/97	नरेन्द्र कुमार	जीवन लाल	37	11वी	कृषि	2/5/97	8	मु. पो. बोदरी चकरभाठा बिलासपुर	
137	तक	हरिभक्त	अमृत	37	अ.	कृषि	15/4/97		मु. पो. पिपरहा स्करंदा बिलासपुर	
138		बेनीराम	रतनू	40	3री	कृषि	15/3/97	8	पोरहादेवरी रतनपुर बिलासपुर	
139		उदयराज सिंह	शिवमंगल	35	5वी	कृषि	25/9/93	8	मु. नवापारा पो. बांगो बिलासपुर	
140		बग्गूराम	रामाधार	55	4थी	कृषि	2-3-97	14	मु.पो. मल्हार मस्तुरी बिलासपुर	
141		भुनेश्वर सिंह	चमार सिंह	24	9वी	मजदूरी	26/2/97	8	मु.पो. तह. गुड़गहना सक्ती बिलासपुर	
142		संतोष	अचल मसीह	24	अशि.	कृषि	12/5/97	12	मु.पो. तिफरा बिलासपुर	
143		पवन	श्याम सुंदर	34	10वी	कृषि	3/6/97	8	मु. पो. खरसीया रायगढ़	
144		अजीत राम	पुरखीराम	30	11वी	आपरेटर	20/4/97	8	मु.पो. कलिपा पारा बिलासपुर	
145		राजन	सहसूराम	21	10वी	मजदूरी	12/5/97	8	मु.पो. सरकंडा बिलासपुर	
146		सीतल	नीलकंठ	35	9वी	कृषि	5/11/96	8	मु.पो. जरहाभाठा सि.ला. बिलासपुर	रिहा
147		धरनीधर	धनीगिरी	30	अशि.	कृषि	15/8/96	8	मु.पो. तह. सरकंडा बिलासपुर	
148		रामनाथ	मुकुन्द	24	7वी	कृषि	14/5/97	8	मु. पो. तह. गौरेला पेंड्रा पथरिया बिलासपुर	
149		कौशल	बिरबल	32	4थी	कृषि	22/4/97	8	मु. पो. तह. कोटा बिलासपुर	
150		रज्जन	बंशीलाल	33	अ.	मजदूरी	6/5/97	8	मु. पो. तह. पाटीपीट सरकंडा बिलासपुर	
151		पुनी लाल	आत्माराम	45	5वी	कृषि	15/10/93	7	गोड़ही पो. थाना. बालको कोरबा बिलासपुर	
152		मुरारी सिंह	माखन सिंह	42	10वी	कृषि	28/4/95	7	मैंसमुड़ी पो. सिकड पांजगीर बिलासपुर	
153		जगन्नाथ	सीताराम	25	8वी	कृषि	25/11/96	7	मु.पो. मडोरा सीपत बिलासपुर	रिहा
154		मनराखन	भागबली	32	5वी	कृषि	1/1/96	7	पंचबहरा पो. बेलसरी तखतपुर बिलासपुर	
155		रामायणदास	परसनदास	30	11वी	नौकरी	7/1/97	7	मु.पो. पतेरापाली सक्ती बिलासपुर	रिहा
156	11/7/97	जनकराम	इतवारी	35	अशि.	कृषि	1/1/96	7	पंचबहरा पो. बेलसरी तखतपुर बिलासपुर	
157	से	राधेश्याम	रतीराम	40	5वी	कृषि	21/6/97	7	मु.पो. कुरमुड़ा लहफोरा बिलासपुर	
158	18/7/97 तक	ऊधोराम	शिवराखन	45	2री	कृषि	10/8/94	7	कुरेली पो. सिरेया बिल्हा बिलासपुर	

P.T.O.

क्र.	दिनांक	नाम व	पिता का नाम	उम्र	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रवेश	दिन	पता →	शिविर [illegible]
159	11 7/97	[illegible]श्वर	लछन सिंह	25	2री	मजदूरी	29 6/97	7	रगेड़ी कुशकुंडा कटघोरा बिलासपुर	रिहा
160	से	छत्तर दास	झुमुक लाल	35	अशि.	कृषि	1 5/97	7	मु.पो. मजगांव भाठापारा रायपुर	रिहा
161	18 7/97	नरबदवा	चोखी	29	अशि.	व्यापार	23 9/97	8	मु.पो. तह. मुंगेली बिलासपुर	रिहा
162	तक	मुरारी सिंह	माखन सिंह	42	10वी	कृषि	28 4/95	7	मेंड्रपुरी पो. सिकुड़ जांजगीर बिलासपुर	
163		उदराज सिंह	शिव मंगल	35	5वी	कृषि	25 9/93	8	नवापारा पो. बांगो बिलासपुर	
164		अजोरी	रंगलाल	50	अशि.	कृषि		7	मु.पो. ओधरा लखनपुर बिलासपुर	
165		सुरतराम	गंगाराम	25	अ.शि.	कृषि	17 4/97	7	मु.पो. जमराज नगर बिलासपुर	रिहा
166		नारायण सिंह	विसाली	24	अ.शि.	कृषि	1 5/97	7	मु.पो. मजगांव भाठापारा रायपुर	रिहा
167		हर प्रसाद	होरी लाल	35	6वी	कृषि	21 6/97	6	मु.पो. परसदा चकरभाठा तखतपुर बिलासपुर	
168		बलराम	जगदीश	32	2री	कृषि	8 6/97	7	मु.पो. कुकनीया बेलतरा रतनपुर बिलासपुर	रिहा
169		पवन सिंह	पुसऊ सिंह	30	अ.शि.	कृषि	11 12/96	7	मु.पो. बेलगहना कोटा बिलासपुर	रिहा
170		चुन्नीलाल	आत्माराम	30	10वी	कृषि	12 3/95	7	मु.पो. गेवरा कोरबा बिलासपुर	रिहा
171	29 7/97	सनतराम	टहलूराम	26	3री	व्यापार	28 4/95	5	मेंड्रपुरी पो. सिकुड़ जांजगीर बिलासपुर	
172	से	मंगलदास	धरमदास	50	11वी	कृषि	24 6/97	5	मु.पो. परसापानी कोटा बिलासपुर	रिहा
173	5 8/97	बालकराम	रामलाल	45	8वी	कृषि	5 7/97	5	मु.पो. [illegible] कोरबा बिलासपुर	रिहा
174	तक	सिकंदर	दक्षु मार्टिन	23	4थी	कृषि	14 2/97	5	मु.पो. तारबाहर बिलासपुर	
175		अंगद राम	भागवत	40	अशि.	कृषि		5	मु.पो. मनेन्द्रगढ़ जिला सरगुजा	
176		पितांबर	कुंजराम	50	4थी	कृषि	18 6/97	5	मु.पो. नवापारा मालखरौदा सक्ती बिलासपुर	रिहा
177		राजकुमार	बोहरन	30	अ.शि.	कृषि	10 7/97	5	मु.पो. सेन्दरी कोनी बिलासपुर	
178		बृजकुमार	रामलाल	30	अ.शि.	कृषि	6 6/97	5	मु.पो. बेरला जरहागांव बिलासपुर	
179		विजयकुमार	टीकाराम	26	10वी	कृषि	12 7/97	5	मु.पो. कुदेला चकरभाठा बिलासपुर	
180		बरन	नारायण	84	अशि.	कृषि	28 4/95	5	मेंड्रपुरी पो. सिकुड़ जांजगीर बिलासपुर	
181		शंभूदयाल	बुधराम	37	8वी	कृषि	7 12/96	7	गैंदलगांव पो. बरमपुर लोरमी बिलासपुर	
182		सीताराम	दसरू राम	30	अ.शि.	कृषि		8	मु.पो. सेन्दरी कोनी बिलासपुर	रिहा
183		हर प्रसाद	होरीलाल	35	6वी	कृषि	21.6.97	6	मु.पो. परसदा चकरभाठा तखतपुर बिलासपुर	
184		गयाराम	दुकुलू	40	अशि.	कृषि	16 7/96	5	भीमपुरी पो. टेढ़ाधौरा मुंगेली बिलासपुर	
185		ईश्वर	डीहराम	24	4थी	कृषि	15 7/97	5	मु.पो. चनीडभाठा लोरमी बिलासपुर	
186		जेराम	केशर	50	4थी	कृषि	23 3/96	15	मु. सूनापानी पो. सरोहा बेरीलोरमी बिलासपुर	
187		सजोराम	खोरराम	55	3री	कृषि	8 4/97	16	मु. कुलकाथाना पो. अमर स्वस्ती बिलासपुर	
188		शंभूदयाल	बुधराम	37	8वी	कृषि	7 12/96	7	गैलगांव पो. बरमपुर लोरमी बिलासपुर	
189										
190										

जीवन विद्या शिविर जानकारी

① दिनांक 15-2-97 से 21-2-97 तक माननीय श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी के द्वारा शिविर आयोजन किया गया था, जिसमें भाग लेनेवालों की संख्या 20 रहा।

② दिनांक 27-3-97 से 3-4-97 तक माननीय श्री भट्टाचार्य जी एवं माननीय श्री गणेश बागड़िया जी के द्वारा शिविर आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वालों की संख्या 21 रहा।

③ दिनांक 15-5-97 से 21-5-97 तक माननीय श्री भट्टाचार्य जी के द्वारा शिविर आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वालों की संख्या 47 रहा।

---

① दिनांक 3-5-97 से 10-5-97 तक वार्ड नं० 14 में करणदास गणेशराम, रामानन्द तथा शंभूदयाल से सलाह होकर जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम रखा गया, भाग लेनेवालों की संख्या 13 रहा। शिविर आयोजक करणदास थे।

② दिनांक 24-5-97 से 31-5-97 तक वार्ड नं० 6 में शिविर आयोजन कार्यक्रम रखा गया भाग लेनेवालों की संख्या 9 रहा।

③ दिनांक 4-6-97 से 11-6-97 तक वार्ड नं० 8 में शिविर आयोजन कार्यक्रम रखा गया, भाग लेने वालों की संख्या 22 रहा।

④ दिनांक 17-6-97 से 25-6-97 तक वार्ड नं० 15 एवं 16 में शिविर आयोजन कार्यक्रम रखा गया, भाग लेनेवालों की संख्या 32 रहा।

⑤ दिनांक 11-7-97 से 18-7-97 तक वार्ड नं० 7 में शिविर आयोजन कार्यक्रम रखा गया, भाग लेनेवालों की संख्या 15 रहा।

⑥ दिनांक 29-7-97 से 5-8-97 तक, वार्ड नं० 5 में शिविर आयोजन कार्यक्रम रखा गया, जिसमें भाग लेनेवालों की संख्या 15 रहा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

नोट :→ उपरोक्त जीवन विद्या शिविर में कई लोगों ने दो या दो से अधिक बार शिविर में भाग लिये, जो निम्नलिखित हैं।

1. करनदास S/o धरमदास – 3 बार भाग लिये
2. गनेशराम S/o जिवराखन – 3 — // —
3. रामानन्द S/o रामनाथ — 3 — // —
4. शंभूदयाल S/o बुधराम – 3 — // —
5. अमितकुमार S/o कोदूराम – 3 — // —
6. संतोष कुमार S/o कुसाऊ – 2 — // —
7. रामगोपाल S/o डोकरीराम – 2 — // —
8. बेदू सिंह S/o गोवर्धन सिंह – 2 — // —
9. रमेश्वर S/o बोधीराम – 2 — // —
10. मुरारी सिंह S/o माखन सिंह – 4 — // —
11. शोभाराम S/o फिरतूराम – 3 — // —
12. सीताराम S/o दरसराम — 2 — // —
13. मनराखन S/o भागबली — 2 — // —
14. शिवराम S/o भागवत — 2 — // —
15. उदराज सिंह S/o शिवमंगल सिंह – 2 — // —
16. कनीराम S/o आत्माराम — 2 — // —
17. हरप्रसाद S/o होरीलाल — 2 — // —

जीवन विद्या मूल्यांकन

जीवन विद्या से मुझमे निम्न सुधार हुआ

① मैं नशा गुड़ाखु, तम्बाकू का सेवन करता था, वह छोड़ दिया।

② विरोधियों के प्रति हमेशा बदला लेने का भावना था वह नहीं है।

③ दूसरे के कार्य में मदद करता हूँ।

④ मेरे इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम होने पर क्रोध आता था वह अब नहीं है

⑤ प्रकृति की व्यवस्था को हमेशा बनाये रखना चाहता हूँ।

हस्ता० गोकुल प्रसाद
वल्द अंजीत
ग्राम पंचायत ग्राम कोरहा
पो० तखतपुर
जिला बिलासपुर
म० प्र०

जीवन विद्या मूल्यांकन

जीवन विद्या से मुझमें निम्न सुधार हुआ

1) मैं पहले बहुत क्रोध करता था।
अब क्रोध नहीं करता हूँ।

2) दूसरे के कार्य में मदद करने पर
मन में संतोष का अनुभव करता हूँ।

3) पहले चिन्ता करता था अब चिन्तन
करता हूँ

4) परिवार और समाज में व्यवहार करता
हूँ और अच्छा रहना चाहता हूँ

5) जीवन विद्या ~~शिविर~~ शिविर में भाग लिया
तब से लालच नहीं करता हूँ।

6) जेल में या शहर में सभी के साथ मिल-
जुल के रहना चाहता हूँ

ह० मनहरनलाल S/o भागवली
ग्राम पंचबहरा या धौरही
था० तखतपुर
जिला बिलासपुर
म0 प्र0

जीवन विद्या मूल्यांकन

जीवन विद्या से मुझमें निम्न सुधार हुआ

1. मैं नशा गुड़ाखू, तम्बाकू का सेवन करता था, वह छोड़ दिया।
2. विरोधियों के प्रति हमेशा बदला लेने की भावना था, वह नहीं है।
3. दूसरे के कामों में मदद करने पर मन में संतोष का अनुभव करता हूं।
4. पहले चिंता करता था अब कोई भी प्रकार की चिंता नहीं करता।
5. मेरे इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम होने पर क्रोध आता था वह आज नहीं है।
6. प्रकृति की व्यवस्था को ऐसा ही बनाये रखना चाहता हूँ।
7. जेल में या बाहर में सभी के साथ मिलजुलकर रहना चाहता हूं।

दशरथ वल्द श्री घासीराम
ग्राम तेन्दुवा (जयरामनगर)
बिलासपुर (म.प्र.)

जीवन विद्या मूल्यांकन

मैं सम्भूदयाल / पिता बुधराम

जीवन विद्या को 1 वर्ष के समझ के अनुसार मेरा स्वयं का मूल्यांकन निम्न लिखित है

(1) मैं प्रति दिन अपने जीवन और शरीर का मूल्यांकन करता हुं कि मेरा जीवन स्तर मे कही कोई गलत तो नहीं हो रहा है। और शरीर के हर आवश्यकता को मैं अपने उगाये वस्तु से निर्वाह करता हुं।

(2) मैं सुखी रहता हुं मेरे को चिन्ता नही होता चिन्ता और चिन्तन अलग- अलग चिज है. चिन्ता से समस्या चिन्तन से समाधान होता है ये जीवन का तीसरा काल है जिससे स्वयं का उदय होता है मैं चिन्ता से समाधान मिलता सुखी रहता हुं मेरे पास जो मिलता है ओर मैं अपने आपको सुखी महसुस करता हूँ।

(3) मैं परिवार, समाज, प्रकृति, अस्तित्व के साथ सम्बंध को और समझके उनके अनुसार निर्वाह करता हु तो मेरे को परिवार, समाज प्रकृति. अस्तित्व समझ मे आता है। प्रकृति के विशाल रचना समझ में आता है।

(4) मैं जेल व्यवस्था को समझ कर उनके अनुसार निर्वाह करताहु और मैं अधिकारी कर्मचारी तथा बन्दी भाईयों के साथ सम्बंध के अनुसार निर्वाह करताहु अपने क्रिया मे नियमण तथा शरीर के द्वारा श्रम को ध्यान पूर्वक करता हु।

(5) जीवन को जिस चिज का जरूरत है उस जीवन विद्या को मैं अपने जीवन मे निरंतर जारी रखुंगा मैं जेल मे हु या बाहर मैं जीवन विद्या के ही अनुसार से मेरे आहार, विहार व्यवहार एवं शरीर द्वारा श्रम करूंगा ये मेरा जीवन का कुछ 4 बात बुद्धि का संकल्प है अतः जीवन विद्या जेल मे निरंतर चलते रहे क्योंकि जेल जैसे मैं सुखी है इसी प्रकार और बन्दी भाई सुखी रह सके बाहर जैसे सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर लगना चाहिए।

सम्भूदयाल
15-2-98

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(iv) <u>समाज व्यवस्था में</u> — समाज में अभय होने हेतु नि: सामाजिक नियमों का पालन करना होगा तभी अभयता संभव है और एक न्याय संस्था का गठन हो जिसमें न्याय संस्था का अधिकार दण्ड देने का नहीं है बल्कि एक दूसरे की मदद करने का अधिकार है निम्न समिति होना चाहिए-

शिक्षा-संस्कार समिति
स्वास्थ्य- संयम समिति
न्याय- सुरक्षा समिति
उत्पादन- कार्य समिति
विनिमय कोष समिति

(v) <u>प्रकृति में व्यवस्था</u> - प्रकृति के चारों अवस्थाओं के साथ (पदार्थ, प्राण, जीव तथा ज्ञानावस्था) हम संगीत करते हुए जीवन में चलते हैं तो निरंतर समृद्धि होते हैं। क्योंकि प्रकृति के व्यवस्था हमारे सदुपयोग के लिए बना है। प्रकृति में निरंतर व्यवस्था है.

पदार्थ अवस्था— मिट्टी, पत्थर, ~~लोहा~~ हवा. पानी
प्राण अवस्था - पेड़, पौधा
जीव अवस्था - पशु, पक्षी
ज्ञान अवस्था - मानव

(vi) <u>अस्तित्व में व्यवस्था</u> —

सत्ता	में संपृक्त	प्रकृति.
व्यापक		
पारदर्शी	घिरा हुआ	4 अवस्था
पारगामी	डूबा हुआ	
अखण्ड	भीगा हुआ	
पूर्ण		
ईश्वर		
अनादि		
ऊर्जा		
आकाश		
असीम		
नियंत्रण		स्वनियंत्रित

(i) जीवन विचार को समझने के बाद निम्नलिखित बातें सोच के समझ में होता है।

<u>स्वयं के बारे में</u> — जीवन में पाँच अक्षय बल तथा बल के क्रिया और जीवन में पांच अक्षय शक्ति तथा शक्ति के क्रिया होता है। जब हम शरीर से अलग जीवन को समझते हैं तो हमें जीवन निम्न बिन्दु पर स्वयं समझ में आता है।

जीवन की शक्ति अक्षय होता है।
जीवन भारहीन होता है।
जीवन जिम्मेदारी वाला होता है।
जीवन की आवश्यकताएँ असीमित होता है।
जीवन के ताकत अधिक होता है।
जीवन के गति तेज होता है।
जीवन प्रभावशील होता है।
जीवन निरंतर सुख चाहता है।

(ii) <u>शरीर के बारे में</u> — जब हम शरीर तथा जीवन (स्वयं) को अलग-अलग समझते हैं, तब हम शरीर को निम्न बिन्दुओं पर समझते हैं।

शरीर क्षय होने वाला है।
शरीर भार वाला होता है।
शरीर के आवश्यकता सीमित होता है।
शरीर स्वतः [illegible] होनेवाला होता है।
शरीर के ताकत कम होता है।
शरीर के गति कम होती है।
शरीर के सुविधा सीमित होता है।
शरीर प्रभावहीन होता है।

(iii) <u>परिवार व्यवस्था में</u> — परिवार को निरंतर सुखी रखने के लिए निम्न बिन्दु जरूरी हैं।

न्याय सुलभता
उत्पादन सुलभता
विनिमय सुलभता — लाभ से मुक्त विनिमय से
स्वास्थ्य संयम
शिक्षा संस्कार

P. T. O.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(4) एक वर्ष में (जीवन विद्या शिविर के बाद) बन्दियों/वि. बन्दियों के व्यवहार में हुए परिवर्तन (सुधार) निम्नलिखित है।

(i) उपद्रवी लड़ाई-झगड़ा व मार-पीट होता था. वह अब नहीं के बराबर होता है अर्थात नहीं होता है।

(ii) गाली-गलौच तथा एक दूसरे के खिलाफ़ होते थे, जो अब ऐसा नहीं है।

(iii) एक आदमी अपने नहाने तक दूसरों को पानी नहीं देता था. यदि धोखे से (गलती से) कोई ले लेता तो उसे लड़ाई ही मार-पीट भरा जाता था. अब ऐसा नहीं है।

(iv) रिहा होने वाले बंदियों से उसके सारे सामान (जूता, चप्पल, कपड़ा आदि) को छीन लेते थे, अब ऐसा नहीं होता है।

(v) मुलाकात में आये हुए सामान गेट कैदियों के द्वारा बलपूर्वक छीन लिया जाता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(vi) बैरक इंचार्जों (राइटरों) का एक स्पेशल ग्लास होता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(5) कर्मचारियों तथा अधिकारियों द्वारा किया गया व्यवहार—

(i) कर्मचारियों तथा अधिकारियों के द्वारा जिस प्रकार अपने सम्बन्धियों से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार से आज बन्दियों से करते हैं।

(ii) मुलाकात समय में हेरा-फेरी होता था, वह आज ऐसा नहीं है

(iii) पहले सप्ताह में दो बार बैरकों में तलाशी होता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(iv) प्रति 15 दिन में बंदियों का बैरक बदल दिया जाता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(v) पहले 8.00 बजे से 11.00 बजे तथा 12.00 बजे से 1.00 बजे तक बैरक बन्द रहता था, अब ऐसा नहीं है।

(vi) छोटा सा आंगन रखना मना था, आज काफी रख रहे हैं।

(vii) पहले बन्दियों में केवल राइटरों पर विश्वास किया जाता था, आज अधिकांश लोगों पर विश्वास किया जा रहा है।

(3) जीवन विद्या शिविर में भाग लेने वालों की जानकारी—

बाहर से आये हुए सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर तथा जेल में निरूद्ध बंदियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर. दोनो के शिविर में भाग लेने वालों की कुल संख्या 229 है से 82 रिहा, 12 जेलस्थानान्तरण तथा वर्तमान में 135 बंदियों/वि. बंदियों के जेल में निरूद्ध है. जिसमें कुछ बंदियों ने दोबारा से अधिक बार भाग लिये जो निम्न है।

1. [illegible] दास S/o [illegible] दास - 5 बार भाग लिया
2. [illegible] S/o [illegible] - 5 —//—
3. रामदयाल S/o कुवाराम - 5 —//—
4. [illegible] नंद S/o रामनाथ - 4 —//— रिहा
5. अनिलकुमार S/o कोंदूराम - 3 —//— रिहा
6. संतोष कुमार S/o [illegible] - 2 —//— रिहा
7. रामगोपाल S/o डोकरीह - 2 —//— रिहा
8. बेदूसिंह S/o गोवर्धनसिंह - 2 —//— जेलस्थानान्तर
9. [illegible] S/o [illegible] - 11 —//—
10. मुरारीसिंह S/o माखनसिंह - 5 —//—
11. [illegible] S/o [illegible] - 3 —//—
12. सीताराम S/o दरसराम - 2 —//— रिहा
13. [illegible] S/o [illegible] - 11 —//—
14. शिवशरण S/o भागवत 3 —//— रिहा
15. उदरामसिंह S/o शिवमंगलसिंह - 2 —//—
16. पुनीराम S/o आत्माराम - 2 —//— जेलस्थानान्तर
17. [illegible] प्रसाद S/o [illegible] लाल - 2 —//—

(ii) माननीय श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी एवं माननीय श्री गणेश बागड़िया जी के द्वारा दिनांक 27-3-97 से 3-4-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया।

(iii) माननीय श्री भट्टाचार्य जी के द्वारा दिनांक 15-5-97 से 21-5-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया

(iv) माननीय श्री भट्टाचार्य जी एवं माननीय बलवंत साहू जी के द्वारा दिनांक 21-12-97 से 27-12-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया।

(v) माननीय श्री भट्टाचार्य एवं माननीय श्री साहू जी के द्वारा दिनांक 26-1-98 से 30-1-98 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया है।

3. जेल में निरुद्ध ~~विचाराधीन~~ / विचाराधीन बंदियों / बंदी के द्वारा जीवन विद्या शिविर —

(i) दिनांक 3-5-97 से 10-5-97 तक जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम करणदास, गणेशराम, शंभूदयाल तथा रामानंद ने पहली बार वार्ड नं. 11 में शुरू किया शिविर आयोजक करणदास तथा सहयोगी में गणेशराम, शंभूदयाल तथा रामानंद रहे।

(ii) दिनांक 24-5-97 से 31-5-97 तक जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम रखा गया।

(iii) दिनांक 4-6-97 से 11-6-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(iv) दिनांक 17-6-97 से 25-6-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(v) दिनांक 11-7-97 से 18-7-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया

(vi) दिनांक - 29-7-97 से 5-8-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(vii) 5-2-98 से 13-2-98 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

दिनांक
23-2-97

प्रति,

श्रीमान् जेल अधीक्षक महोदय,
माननीय श्री डा. के.के. गुप्ता साहब,
आदर्श जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

विषय — जीवन विद्या शिविर को एक माह चलते रहने के आग्रह से।
द्वारा — अबटबोल आजीवनकारा जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

महोदय,

हमारे लिए बड़े ही हर्ष की बात है कि आप इस आदर्श जिला जेल में हम बंदियों के सुधार हेतु आप अनेकों कार्यक्रम करते, जिनमें से जीवन विद्या शिविर दिनांक 15-2-97 से आज तक चल रहा है, जिससे हमारे अध्यात्म क्षेत्र में विकास हुआ और इस जीवन विद्या से हमें एक नयी दिशा मिली, कि हम "निरंतर सुख से जीने की समझ" (ज्ञान) आप को निरंतर सुखी होने का अवसर देते हैं। इसके लिए हम (जीवन को समझाने वाले स्वामी) आपके ऋणी हैं।

अतः श्रीमान से हम निवेदन करते हैं कि वे जीवन विद्या शिविर इस कार्यक्रम को निरंतर चलाते रहें। जिससे जेल के सामान्य बंदी भाइयों के जेल जीवन सुधार अवसर का लाभ लेते रहें, तथा जो भी बाहर से आपके बंदीगृह में बंदी बनकर आवे, वे इस जेल से सुखी होकर जावे तथा बाहर आदर्श जेल जीवन को परिभाषा के रूप में जाना जा सके।
उपरोक्त सम्बन्ध में निम्नलिखित जानकारियाँ हैं —

(1) जीवन विद्या शिविर की जानकारी —

(अ) बाहर से आये हुए सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर —

(i) माननीय श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी के द्वारा दिनांक 15-2-97 से 21-2-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

(4) संग्रह के भाव को विचार में निकाल कर, असंग्रह के भावना रखता हूँ।

(5) क्रिया में नियंत्रण करके अर्थात जेल नियमों के पालन करके स्वतन्त्र हूँ। जिसके कारण मेरे [illegible] जेल साथी (बंदी भाईयों) तथा कर्मचारी व अधिकारी विश्वास करते हैं। इस व्यवहार को व्यवहार में जरूरी है।

(6) रूप, बल, पद, धन में अस्थायी गुण है; इसे स्थायी करने पर दुखी होते हैं। इस में स्थायी बिलकुल ही नहीं [illegible]।

(7) जीवन विद्या के माध्यम [illegible] दो या अधिक व्यक्तियों के पास कह कर या [illegible] करके अपने और सुखी पाता हूँ।

(8) देवी, देवता, भगवान, [illegible], आदि के विचार से निर्भ्रम हो गया हूँ।

[illegible] — गोरेलाल 540 [illegible]

[illegible] करने से मुझे अनुभव होता है कि मनुष्य लेता हूँ तो [illegible] लोता नहीं और [illegible] के [illegible] नहीं।

(2) [illegible] हैं, [illegible] हो जाता है। [illegible] से हमेशा सुख अनुभव होता है।

(3) [illegible] बलवान होने पर [illegible] आज नहीं है।

(4) [illegible] मनुष्य [illegible] हूँ [illegible] हूँ इस [illegible] के अनुसार, चारों अवस्था के [illegible] रहना [illegible] है।

(5) मुझे आजीवन को [illegible] में [illegible] नहीं हूँ [illegible] हूँ, [illegible] नहीं है, [illegible] कल्पना [illegible] हूँ [illegible]

शून्य – जो स्थान में क्रिया नहीं पर सभी क्रियाएं जिससे आवेष्टित एवं अभिव्यक्त हैं, उसे शून्य कहते हैं।

व्यापक – सभी जगह पाया जाता है।

पारदर्शी – जिसके आर-पार दिखाई पड़ता हो।

पारगामी – हर चीज में पारगामी हो।

अखण्ड – जिसका विभाजन न हो।

पूर्ण – कोई परिवर्तन न हो।

ईश्वर – सभी जगह एकाग्रता अनुभव हो।

अनादि – जिसका जन्म-मरण न हो।

ऊर्जा – हर चीज में क्रियाशील हो, जो दिखाई न दे।

प्रकाश – जो हर जगह दिखाई दे।

असीम – जिसका कोई सीमा न हो।

नियंत्रण – जिसमें लम्बाई चौड़ाई, मोटाई, तथा ऊँचाई का नियंत्रण हो।

(7) मूल्यांकन — मानसिक मूल्यांकन निम्नांकित है [illegible] [illegible] [illegible] गई हैं :
मूल्यांकन ~~[illegible]~~ करने वालों के नाम

① करुणादास S/o श्री धर्मदास
② शंभूदयाल S/o श्री बुधराम
③ रविशंकर S/o श्री शिवशंकर
④ दशरथ S/o श्री धनीराम
⑤ मनोहरलाल S/o श्री भागवली
⑥ गोकुल S/o श्री [illegible]

मूल्यांकन – करुणादास S/o [illegible] [illegible]
मेरा स्वभाव के मूल्यांकन निम्नलिखित है।
(1) चिन्ता छोड़कर चिंतन करने लगा हूँ।
(2) क्रोध करता था, अब क्रोध नहीं आता है।
(3) घृणा करना छोड़कर स्नेह करने लगा हूँ।

P.T.O

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal